विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन

जैन विश्व भारती संस्थान, लाडनूं

के शिक्षा अधिस्नातक (एम.एड.)

उपाधि की आशिंक

पुर्ति हेतु प्रस्तुत

लघु शोध प्रबंध

निर्देशक

प्रो. बनवारी लाल जैन

(विभागाध्यक्ष)

शोधकर्त्री

सोनिका मिश्रा

एम.एड. छात्रा

शिक्षा विभाग

जैन विश्व भारती संस्थान

लाडनूं – 341306 (राजस्थान)

घोषणा पत्र

मैं **सोनिका मिश्रा** शोधकर्त्री जैन विश्वविद्यालय लाडनूं यह द्योषणा करती हूँ कि मैंने अपना लघु शोध प्रबंध का कार्य जिसका शीर्षक **"विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"** प्रो. बनवारी लाल जैन, (विभागाध्यक्ष शिक्षा विभाग) के कुशल एवं प्रेरणास्पद मार्गदर्शन में पूर्ण किया।

दिनांक–

शोधकर्त्री

सोनिका मिश्रा

प्रमाण पत्र

प्रमाणित किया जाता हैं कि **सोनिका मिश्रा एम.एड़ (छात्रा)** द्वारा **"विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"** विषय पर लघु शोध प्रबंध का कार्य मेरे निर्देशन में सम्पन्न किया गया है।

निर्देशक

प्रो. बनवारी लाल जैन

(विभागध्यक्ष)

(जैन विश्वभारती संस्थान लाडनूं)

आभार प्रसून

कार्य आपके प्रेरणा दिलाये, प्रगति का मार्ग प्रशस्त करावे।

पथ–पदर्शक आप हमारे, आशीष आपका हमें संवारे।।

मैं अपने आपकों सौभाग्यशाली मानती हूँ कि प्रस्तुत लघु शोधकार्य शिक्षा शोध के क्षेत्र में अनमोल अनुभवों को अपने व्यक्तित्व एवं कृतित्व में समेटे हुए परम आदरणीय **निर्देशक विभागध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन** के सतत् निर्देशन के परिणाम स्वरूप ही मेरा लघु शोध सम्यक रूप से पूर्णता प्राप्त कर सका है। इस अनमोल अवसर की सीख मेरे शेष जीवन में अमृत तुल्य सिद्ध होगी। मैं आपके स्नेह व सहयोग के प्रति सदैव कृतज्ञ रहूँगी।

मैं संस्थान के समस्त प्रवक्ताओं **डॉ. अमिता जैन, डॉ मनीष भटनागर, श्री गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. भावाग्राही प्रधान, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभासिंह, डॉ. अदिति गौतम एवं डॉ. सरोजयराय** की हदय से आभारी हूँ। जिनकी सहानुभूति गहन दृष्टिकोण व आत्मीय व्यवहार ने मुझे सदैव प्रोत्साहन प्रदान किया। इन्होंने सदैव अपने वचनों से मुझे प्रोत्साहित किया व प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से इस शोध कार्य में रचनात्मक सहयोग प्रदान कर मुझे लाभान्वित किया।

सर्वप्रथम में अपनी आदरणीय **श्वसुर–सास (श्री नन्द किशोर शर्मा व श्रीमती सुमन देवी) जेठ–जेठान (श्री कैलाश चन्द्र शर्मा एवं श्रीमती अर्चना शर्मा) स्नेही देवर–देवरानी (श्री कृष्ण कुमार शास्त्री एवं श्रीमती नेहा शर्मा), पिता–माता (श्री**

विकास चन्द्र मिश्रा एवं श्रीमती सविता मिश्रा) एवं भाई–भाभी (श्री यदुराज मिश्रा एवं डॉ श्रीमती कामिनी तिवाड़ी) के प्रति कृतज्ञ हूँ, जिनका आर्शीवाद, प्रेरणा एवं स्नेह सदा मुझे इस कठिन कार्य को अंजाम देने के लिए मेरा पथ प्रदर्शन करता रहा एवं अपना अमूल्य सहयोग व समय देकर मुझे मानसिक रूप से इस शोध कार्य को पूर्ण करने हेतु तत्पर किया।

साथ ही मैं अपने पति **श्रीमान कुलदीप शर्मा (सी.ए.) तथा पुत्र शिवांश एवं पुत्र लक्ष्मी** की भी आभारी हूँ, जिनका अनुभव, निर्मल स्नेह, अमूल्य सहयोग एवं बाल प्रेम मुझे इस कठिन मार्ग पर चलने के लिए निरन्तर प्रेरित करता रहा है।

अंत में मैं **एन.के. फोटो कॉपियर्स** के **श्री पवन कुमार सैन** की भी आभारी हूँ जिनके अथक परिश्रम, अनुभव एवं सहयोग से ही यह लघु शोध प्रबंध कलात्मक रूप से पूर्ण किया जाना संभव हो सका है। यदि इस लघु शोध प्रबंध की प्रस्तुति आकर्षक, सुन्दर एवं स्पष्ट एवं समय से देय बन पडी है तो इनका श्रेय निः संदेह एन.के. फोटो कॉपियर्स को दिया जाना चाहिए।

अंत में परम पिता परमात्मा को शत्–शत् नमन करती हूँ जिन्होंने मुझे इस योग्य बनाया कि मैं प्रस्तुत शोध का अध्ययन कर सकी।

प्रस्तुतकर्त्री

स्थान–लाड़नूं

दिनांक–

सोनिका मिश्रा
(एम.एड.)
शिक्षा विभाग
जैन विश्व भारती विश्वविद्यालय
लाडनूं, नागौर (राज.)

अनुक्रमणिका

क्र.स.	विषयवस्तु	पृष्ठ संख्या
1.	**प्रथम अध्याय समस्या का प्रादुर्भाव एवं अभिकथन**	**1-16**
1.1	प्रस्तावना	2-12
1.2	समस्या का औचित्य	12-13
1.3	समस्या कथन	13
1.4	शोध के उद्देश्य	13-14
1.5	शोध की परिकल्पनाएं	14
1.6	तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण	14-15
1.7	जनसंख्या	15
1.8	न्यादर्श का चयन	15
1.9	शोध के उपकरण	15
1.10	शोध के चर	15
1.11	सांख्यिकी	16
1.12	शोध की विधि	16
1.13	शोध की परिसीमाएं	16
2.	**द्वितीय अध्याय सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन**	**17-31**
2.1	प्रस्तावना	18
2.2	सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषाएँ	18-20
2.3	सम्बंधित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य	20-21
2.4	सम्बंधित साहित्य की सूचनाओं के स्त्रोत	21-23
2.5	अध्ययन से संबंधित अनुसंधानों का विवरण	24-31
3.	**तृतीय अध्याय शोध प्रारूप व उपकरण**	**32-49**
3.1	प्रस्तावना	33
3.2	शोध विधि	34-39
3.3	चर	39-40
3.4	न्यादर्श	40-43
3.5	उपकरण	43-44

3.6	प्रश्नावली	44-45
3.7	प्रशासन	45-46
3.8	अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकी	47-49
4.	**चतुर्थ अध्याय** **आंकड़ों का वर्गीकरण, विश्लेशण एवं व्याख्या**	**50-65**
4.1	प्रस्तावना	51-52
4.2	सारणीयन का अर्थ व परिभाषा	52-54
4.3	तथ्यों का प्रस्तुतीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण	55-65
5.	**पंचम अध्याय** **शोध सारांश एवं निष्कर्ष**	**66-75**
5.1	प्रस्तावना	67
5.2	शोध अध्ययन की आवश्यकता	67-68
5.3	समस्या कथन	68
5.4	शोध के उद्धेश्य	68
5.5	परिकल्पनाएं	69
5.6	शोध विधि	69
5.7	न्यादर्श	69
5.8	चर	69-70
5.9	शोध अध्ययन के स्त्रोत	70
5.10	शोध में प्रयुक्त उपकरण	70
5.11	शोध में प्रयुक्त सांख्यिकी	70
5.12	प्रस्तुत शोध का निष्कर्ष	71-73
5.13	शोध संबंधी शैक्षिक निहितार्थ	73-74
5.14	भावी अनुसंधान के लिए सुझाव	74-75
5.15	उपसंहार	75
6.	सन्दर्भ ग्रन्थ सूची	76-79

प्रथम अध्याय

समस्या का प्रादुर्भाव एवं अभिकथन

Introduction

"शैक्षिक अनुसंधान वह प्रक्रिया है जो शैक्षिक परिस्थितियों में व्यवहार के विज्ञान का विकास करने की ओर निर्देशित है। इस प्रकार के विज्ञान का अंतिम उद्देश्य ऐसा ज्ञान प्रदान करना है, जो शिक्षक के लिए सबसे अधिक प्रभावकारी पद्धतियों के द्वारा अपने लक्ष्यों मे सहायक हो सके।"

प्रथम अध्याय

समस्या का प्रादुर्भाव एवं अभिकथन

1.1 प्रस्तावना :–

आज के शैक्षिक युग मे जहां सार्वभौमिकरण और तीव्र वैज्ञानिक तथा तकनीकी विकास हो रहा है। पूरे विश्व मे किशोर तथा युवा अपने कॅरियर के चयन व योजना संदर्भ मे विभिन्न चुनौतियों का सामाना कर रहे है। अपनी चयन योग्यताओं, क्षमताओं, कौशलों, ज्ञानात्मक संरचना, रूचि, मूल्य पद्धति तथा व्यक्तित्व गुणों के अनुसार सही कैरियर का चयन करके व्यक्ति अपनी संभव शक्तियों के साथ उच्च सीमा तक संतोष प्राप्त कर कार्य क्षेत्र मे प्रदर्शन कर सकता है, इसी कारण से प्रत्येक बालक को अपने कैरियर के प्रति निर्णय लेने मे गंभीर होना चाहिए क्योकि इस निर्णय के आधार पर ही वह आजीवन व्यवसायिक तथा अपनी सामाजिक पहचान को आधार प्रदान कर सकता है। सामान्यतः कैरियर के लिए निर्णय बालकों के माता–पिता व सम्बन्धियों की इच्छा पर किए जाते हैं, जिसका उद्वेश्य केवल व्यक्ति द्वारा अधिक से अधिक धन अर्जित करना है। संतोषजनक ढंग से कैरियर को प्राप्त करना आज के युवाओं का लक्ष्य बन गया है। जिसमें विद्यार्थी का मनोबल उसके कैरियर के चयन मे महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

आज प्रतियोगिता एवं तेजी से होते हुये तकनीकी विकास के युग मे विद्यार्थी विस्तृत दृष्टिकोण के साथ विषयवस्तु के अधिगम हेतु उच्च मनोबल रखते है जिससे कि वे अपना लक्ष्य प्राप्त कर सकें। विद्यालयी वातावरण में रहते हुये एक वृहद स्तर पर सामाजिक अन्तःक्रिया के माध्यम से कैरियर सम्बन्धी ज्ञान को अर्जित करने, अपने व्यक्त्वि क्षमताओं, कौशलों, प्रभावशीलता को बढ़ाने का प्रयास करते है। अधिक से

अधिक अंक अर्जित कर शैक्षिक उपलब्धि के द्वारा स्वयं को सहपाठियों व अध्यापको के समक्ष स्थापित करना चाहते है लेकिन फिर भी आधुनिक शैक्षिक एवं व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य में देखते हुये यह अत्यधिक निराशाजनक है कि कॅरियर नियोजन में व्यक्तिगत विभिन्नताओं के बावजूद अधिकांश बालक अपने कॅरियर का चयन उस व्यवसाय की भविष्य अवस्थिति के बिना निरूद्देश्यपूर्ण ढंग से, संयोग से तथा अपरिकल्पित ढंग से कर रहे है। वास्तविक सामाजिक तथा पारिवारिक परिप्रेक्ष्य बालकों की मनोवैज्ञानिक योग्यताओं तथा क्षमताओं, उनकी स्वभावगत तथा व्यक्तित्व दशाओं को जानते हुये भी हमारे देश में युवाओं तथा विद्यार्थियों की एक बहुत बडी संस्था अपने कॅरियर का नियोजन उपयुक्त तथा बुद्धिमतापूर्ण ढंग से नहीं कर पा रही है।

आज के समय में किशोंरों में सम्मुख सबसे बडी एवं महत्वपूर्ण समस्या यह है कि भविष्य में क्या किया जाए ? विशेषतया किस व्यवसाय का चुनाव किया जाए ?

प्राचीन समय में व्यवसाय का चुनाव कोई गम्भीर समस्या नहीं थी क्योंकि अधिकांश लोग पीढ़ी दर पीढ़ी चले आ रहे व्यवसाय या परम्परागत व्यवसाय को स्वतंत्र रूप से अपना लेते थे। लेकिन आज के इस युग में स्त्री व पुरूष दोनों की कॅरियर चुनाव की स्वतंत्रता के साथ साथ एक कठिन समस्या का सामना भी कर रहे है।

बीती सदी के साथ ही भारतीय परिवारों का पुराना ढांचा संयुक्त परिवार बुरी तरह बिखर चुका है। जहां एक ही घर आंगन में एक छत की नीचे कई पीढ़ियां निश्चित रहा करती थी वहीं अब दो पीढियां भी एक साथ रहते हुये अलग रहने का प्रयास करती है।

बदलते परिवेश में अनेक बदलावों के साथ साथ आज एक अनोखे परिवर्तन की छाप जब समाज व घर परिवार में स्पष्ट दिखाई दे रही है, वह है स्त्री की भूमिका।

वक्त बदलने के साथ भारतीय समाज में औरत की स्थिति भी बदली है। आज महिलाएं घर की देहरी तक ही सीमित नहीं है वे घर बाहर दोनों ही जगह बखूबी अपनी भूमिका निभा रही है। कोई भी कार्य क्षेत्र ऐसा नहीं है, जहाँ औरतें अपने दायित्व न निभा रही हो। प्रत्येक स्त्री अनेक कारणों की वजह से ऐसा निर्णय लेती है। एक कामकाजी महिला का प्रभाव उसके बच्चों पर भी पड़ता है। क्रो एण्ड क्रो (1994) का वक्तव्य है कि कामकाजी माता के बच्चे अधिक आत्मनिर्भर एवं जिम्मेदार होते है।

अगर बच्चे अपने माता–पिता के कार्य व्यवहार से संतुष्ठ होते है तब वे स्वयं उसी व्यवसाय को अपनाना चाहते है एवं माता–पिता भी शिक्षा के साथ साथ अपने बच्चें का ध्यान किशोरावस्था तक आते–जाते किसी व्यवसाय की तरफ आकर्षिक करने की कोशिश करते है।

शिक्षा के कई मुख्य उद्देश्यों में कॅरियर आज के परिप्रेक्ष्य में अत्यन्त महत्वपूर्ण उद्देश्य बन गया है। अब शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्र का सम्पूर्ण मानसिक एवं शारीरिक विकास करते हुये उसे जीविकोपार्जन हेतु सक्षम बनाना है। कॅरियर या व्यवसाय विद्यार्थियों की निश्चित प्राथमिकताओं पर आधारित है। विशिष्ट कॅरियर के निर्णय का आधार, उनके अध्ययन के विभिन्न पाठ्यक्रमों में से एक का चयन होता है।

एच. चन्द (1979) ने व्यावसायिक परिपक्वता तथा शैक्षिक वातावरण के मध्य सार्थक संबंध बताया। जितेन्द्र दाहिया व अशोक शर्मा (2001) ने भी विद्यालयी शिक्षा को विद्यार्थियों में कॅरियर/व्यावसायिक परिपक्वता को प्रभावित करने वाला घटक बताया है। अतः विद्यालय में बालक जब सीखता तथा कार्य करता है, उस समय यह एक निष्ठ, आत्मगत, बुद्धिसंगत प्रक्रिया का विषय मात्र नहीं है, अपितु यह प्रक्रिया, सामग्री तथा अन्तः व्यैक्तिक संबंधों के तन्त्र के रूप में घटित होता है। वस्तुगत कार्य

दशाएँ व्यक्ति, सम्मिलित संबंधों, बातचीत का निर्माण करते है। इसी वातावरणीय प्रभाव को जलवायु भी कहते है तब हम अनुभावों के आधार पर इसे सुखद, अशान्त, सौभ्य, सामान्य या कठोर वातावरण कहते है।

शैक्षिक वातावरण एक विशेष अधिगम परिस्थिति में विद्यार्थियों की विशिष्ट संवेगात्मक दशा में अन्तर्निहित होता है। वस्तुनिष्ठ स्थितियां, अन्य चीजों के बीच जो शैक्षिक वातावरण को प्रभावित करती है, वे अधिगम का स्थान, पाठ्यपुस्तकें, उपकरण, अनुदेशन के उद्देश्य तथा अनुदेशन का विषय है। आत्मगत स्थितियों के मध्य अध्यापक का तौर तरीका, व्यवहार साथियों व विद्यार्थियों से संबंध तथा उनके अधिगत की आवश्यकता को पहचानता है। आज प्रत्येक माता–पिता, बालक तथा शिक्षा का उद्देश्य बालक के कॅरियर विकास हेतु उसमें योग्यताओं, दक्षताओं तथा कॅरियर के प्रति जागरूकता को उत्पन्न तथा विकसित करना है। कॅरियर से अभिप्रायः सिर्फ नौकरी प्राप्त करना ही नहीं है अपितु यह एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जिसका संबंध व्यक्ति की रूति क्षमता, काम से मिलने वाली सन्तुष्टि तथा जीवन के सिद्धान्तों व आदर्शो से जुड़ा होता है। यह विद्यार्थियों का मनोवैज्ञानिक स्तर पर विषयों के चयन व चयनित विषय में अच्छा प्रदर्शन करने हेतु करता है।

जीवनवृत्ति परिपक्वता –

कॅरियर एक व्यक्ति की आजीवन उन्नति को निर्धारित करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करता है।

कॅरियर – ''जीवनयापन का आधार''

वह कार्य जो जीविकोपार्जन या जीवनकाल के लिये किया जाता है।

सुपर परिभाषित करता है कि ''कॅरियर, एक व्यक्ति द्वारा अपने पूर्व व्यावसायिक तथा उत्तर व्यावसायिक जीवन में अधिकृत स्तरों (प्रतिष्ठाओं) का क्रम रूप है''

मोहन एस के अनुसार, ''कॅरियर विकास से तात्पर्य है किसी का सम्पूर्ण विकास जो कि कार्य की दुनिया के विषय में सीखने, उसके लिये तैयारी करने, उसमें प्रवेश करने तथा उसी में उन्नति करने पर बल देता है''।

कॅरियर अभिवृत्ति से तात्पर्य एक कॅरियर का चयन करने तथा कार्य क्षेत्र में प्रवेश करने के लिये बालक की भावनाएं आत्मगत प्रतिक्रियाएं तथा मनस्थितियां है जबकि सक्षमता से अभिप्रायः एक व्यवसाय को चयन करने के ज्ञानात्मक चरों से है जिसके अर्न्तगत बालक की व्यवसाय संबंधी योंग्यताओं (शक्तियों तथा कमजोरियों) का मूल्य निर्धारण कार्यक्षेत्र की जानकारी, व्यावसायिक मांगो से व्यक्तिगत विशेषताओं के मेल की उपयुक्तता, कॅरियर के लिये योजना बनाने में दूरदर्शिता, समस्याओं के साथ व्यवहार करने में प्रभावशीलता है जो कि कॅरियर विकास के मार्ग में आती है।

कॅरियर के प्रति निर्णय क्षमता चार तत्वों में निहित है – स्वयं के विषय में जागरूकता, कॅरियर के विषय में जानकारी, कॅरियर की योजना तथा स्थापना (लक्ष्मी के. एस. 2002) अध्यापक जो कि विद्यालयी वातावरण का एक अत्यन्त महत्वपूर्ण कारक है, उसका पूर्ण व्यक्तित्व तथा गुण, बालक की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को निर्धारित करने का प्रयास करते है, साथ ही बालक के आत्मसम्मान, विषय संबंधी ज्ञान, स्वय के प्रति ज्ञान, बदलते युग की मांगों का ज्ञान, शैक्षिक उपलब्धि आदि को घटाने व बढाने के रूप में भी कार्य करता है। परिवार के अतिरिक्त विद्यालयी वातावरण उपरोक्त चारों तत्वों को विकसित करने में बराबर के साझेदार है। सहपाठी की देखादेखी भी विषयों का चयन, कॅरियर का चयन संबंधी निर्णय, उसकी जानकारी आदि को प्रोत्साहन

मिलता है। यदि अध्यापक छात्रों के प्रति झुकाव, स्नेह, उत्साह तथा उनके साथ अन्तः क्रिया में जुड़े हुये प्रतीत होते है तो छात्र कॅरियर के संबंध में असमंजस की स्थिति से बचने के लिये अध्यापक से विचार विमर्श कर सकते है। एक अध्यापक का व्यक्तित्व, स्नेह, ज्ञान तथा मार्गदर्शन छात्र की निर्णय क्षमता को प्रभावित करता है। अध्यापक एक परामर्शदाता की भांति उनकी योग्यताओं, रूचियों, शक्ति तथा कमजोरियों के विषय में उचित जानकारी देते हुये उपलब्ध कॅरियर विकल्पों के विषय में सूचना प्रदान कर निर्णय को सबल बनाने में योगदान दे सकता है, लेकिन आज विद्यालयों में विद्यार्थी के सर्वांगीण विकास, उसकी आवश्यकताओं व क्षमताओं पर एकाग्रचित होने के बजाये उसके बस अधिक से अधिक अंक हासिल करने के लिये प्रेरित, बाध्य तथा तैयार किया जाता है। उच्च शैक्षिक उपलब्धि को ही परिवार तथा विद्यालय में प्राथमिकता दी जाती है। शैक्षिक उपलब्धि से तात्पर्य किसी विशेष विषय या विषयों के समूह में अर्जित किया गया, बोध व कौशल से है। सुपर महोदय के अनुसार, एक उपलब्धि परीक्षण यह ज्ञात करने के लिये प्रयोग किया जाता है कि व्यक्ति ने क्या और कितना सीखा ? तथा किसी कार्य को भलीभांति कैसे कर सकता है ? बालक की शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने में भी परिवार तथा विद्यालय की महत्वपूर्ण भूमिका है। **लेविस** (1904), जॉन (1968) तथा डॉक्टर (1784) ने भी बताया है कि विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि केवल उनके व्यक्तित्व गुणों से ही प्रभावित नहीं होती अपितु कक्षा का वातावरण, अध्यापक का व्यक्तित्व, उसकी नेतृत्व शैली तथा विद्यार्थियों से अपेक्षाएं, कुल विद्यालयी वातावरण के रूप में विशेष रूप से प्रभावित करती है। **टी. सी. ज्ञानानी, व तनुजा अग्रवाल (1998)** ने भी प्रस्तुत किया है कि अधिगमकर्ता का शैक्षिक प्रदर्शन तथा उपलब्धि को सार्थक रूप से कक्षा–कक्ष के वातावरण, अध्यापक की प्रभावशीलता तथा

छात्रों के प्रति उनकी अपेक्षाएं प्रभावित करती है, परिणाम प्रदर्शित करते है कि अध्यापक कक्षा में अनुकूल वातावरण उत्पन्न करने के लिये एक महत्वपूर्ण कारक है जिनके परिणामस्वरूप विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित होती है। **टिबेट्स** (1940), **रिचर्ड** (1954), **कोक्लिन** (1953), **मॉरॉ तथा विल्सन** (1961), **मैनिनो** (1962), **झा. वि.** (1970) तथा **दवे पी. एन. तथा ज्योत्सना** (1977) ने प्रस्तुत किया कि पारिवारिक वातावरण में माता–पिता तथा बच्चे के साथ संबंध उनके द्वारा प्रदत्त प्रोत्साहन जोश, प्रशंसा व स्वीकारोक्ति आदि ऐसे परिवर्त्य है, जो बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर सकारात्मक प्रभाव डालते है। बालकों की निम्न शैक्षिक उपलब्धि बालकों को परिवार में कठोर तथा बार बार मिलने वाला दण्ड़, कठोर प्रवृत्ति, अलगाव, पैतृक प्रोत्साहन की कमी के कारण परिलक्षित होती है। अभी तक विद्यालयी वातावरण तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य सहसंबंध को ज्ञात करने के लिये अनेक अध्ययन किये जा चुके है। उसी प्रकार बालको की शिक्षा के महत्व के क्रम में व्यवसाय या कॅरियर वरीयता पर है। इन वरीयताओ के आधार पर ही छात्र अध्ययन के विभिन्न पाठ्यक्रमों का चयन करते है।

प्रत्येक व्यक्ति कॅरिसर का चुनाव करने से पहले अनेक निर्णय करता है। प्रत्येक निर्णय एक गतिशील प्रक्रिया का परिणाम है जो कि असंख्य शक्तियों से प्रभावित होता है।

निर्णय लेने की प्रक्रिया विभिन्न अवस्थाओं से गुजरती है और इन सभी अवस्थाओं का मूल उद्देश्य निर्णय द्वारा समस्या को हल करना है। समस्या का समाधान कितने प्रभावी ढंग से निर्णय लिया जाता है, इस बात पर निर्भर करता है।

इस प्रकार एक प्रभावशाली निर्णय वह है जो क्रिया–केन्द्रित, लक्ष्य केन्द्रित है और उसकी कार्यान्विति में क्षमता प्रदान करता है।

कॅरियर निर्णय क्षमता विभिन्न व्यावसायिक क्षेत्रों में आगे विचार करना सम्मिलित करता है। एक व्यक्ति स्वयं से विभिन्न प्रकार के प्रश्नों को पूछता है, जो उसकी कॅरियर योजना में निहित विचार करने के स्तर को प्रदर्शित करता है। ये स्तर कॅरियर वर्ग से संबंधित है। **गिलमर, बी. वोलहेलर** ने कुल आठ जीविका वर्ग (कॅरियर फैमिली) दिये है – प्रत्येक उच्च से निम्न स्तर पर पायी जाती है। प्रथम नौकरी समूह है जिसमें सामान्य हित के लिये कार्य करने वाले व्यक्ति निहित है। द्वितीय वर्ग व्यापारी सम्पर्क रखने वालों का है। तृतीय वर्ग संगठन समूह जिसमें औद्योगिक प्रशासक, मैनेजर, डाकिया से फाईल क्लर्क है। चतुर्थ वर्ग तेजी से बढता हुआ समूह तकनीकी से संबंधित जिसमें इंजिनियर, ठेकेदार, मैकेनिक आदि है। पंचम वर्ग में वे लोग है जो वाहक जीविका का अनुसरण करते है तथा जो लगभग उसी पारिवारिक पृष्ठभूमि से आते है। छठे वर्ग में विज्ञान से संबंधित कार्यकर्ता, यथा – वैज्ञानिक से शव संलेपन करने वाले है। सप्तम वर्ग में सामान्य संस्कृति से संबंधित अध्यापक वर्ग से लेकर रिपोर्टर है। अष्ठम वर्ग में वे है जो कला तथा मनोरंजन से संबंधित कार्य जैसे – रचनात्मक कलाकार, शोमैन, रेस ड्राईवर तथा कला मंच को संभालने वाले है।

इन विभिन्न पाठ्यक्रमों के चयन का आधार वरीयता क्रम या बौद्धिक योग्यता ही नहीं होता है अपितु बहुत से कारक इसे प्रभावित करते है और इन चरों में एक मुख्य कारक बालक की शैक्षिक उपलब्धि भी है। अतः पूर्व की कक्षाओं में शैक्षिक उपलब्धि उनकी कॅरियर के प्रति निर्णय क्षमता को भी एक सीमा तक प्रभावित करती है।

अतः शैक्षिक उपलब्धि कॅरियर निर्णय क्षमता/व्यवसायिक परिपवक्ता के लिये निर्धारक तत्व है। अध्ययन के अनेक उद्देश्यों में से इसी एक उद्देश्य को सिद्ध करने के लिये **गीतिका दत्त** (2005) ने निष्कर्ष में पाया कि शैक्षिक उपलब्धि कॅरियर चयन पर सकारात्मक प्रभाव डालती है। यद्यपि **गुप्ता एस. के.** (1991) ने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में कॅरियर के प्रति निर्णय क्षमता अथवा व्यावसायिक परिपक्वता तथा शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध में विभिन्न निष्कर्ष स्पष्ट होते है। इन दोनों चरों के मध्य संबंध व प्रभाव की जांच करना इस अध्ययन का एक अन्य प्रयास भी है क्योंकि वर्तमान शिक्षा प्रणाली में विद्यार्थी का विकास ऐसी ही समझ के साथ हो रहा है। जहां जहां शिक्षा का उद्देश्य काफी हद तक कॅरियर बनाना ही रह गया है। विद्यालयों में विद्यार्थी का विकास उच्च शैक्षिक उपलब्धित के रूप में सीमित हो गया है। अतः कॅरियर संबंधी निर्णय अनेक तत्वों से प्रभावित होता है। आर्थिक–सामाजिक स्थिति, पारिवारिक वातावरण, विद्यालयी वातावरण, मित्रों व सहपाठियों से प्रतियोगिता व प्रतिस्पर्धा की भावना शैक्षिक उपलब्धि आदि प्रमुख है। किशोरों तथा युवाओं के कॅरियर संबंधी निर्णय के पीछे अभिभावको का दबाव व स्वयं की शैक्षिक उपलब्धि तथा अध्यापको द्वारा मार्गदर्शन इसके प्रमुखर कारण होते है। ध्यान देने योग्य बात यह है कि कॅरियर का अभिप्राय सिर्फ नौकरी प्राप्त करना ही नहीं है अपितु यह एक जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया है जिसका संबंध व्यक्ति की रूचि, क्षमता कार्य से मिलने वाली संतुष्टि तथा जीवन के सिद्धान्तों व आदर्शो से जुडा होता है। यह एक वैज्ञानिक पहलू है कि जब व्यक्ति अपनी रूचि व्यवहार व योग्यता के अनुरूप कॅरियर हेतु निर्णय लेता है तो वह न सिर्फ सफलता प्राप्त करता है अपितु अधिक रचनात्मक ढंग से भी कार्य कर पाता है। अतः कॅरियर के संबंध में किया गया सोच विचारपूर्ण निर्णय विद्यार्थियों के लिये

काफी मददगार सिद्ध होता है तथा कॅरियर की आगामी योजनाओं को निर्धारित करने की उनकी क्षमता को बढा देता है।

शैक्षिक उपलब्धि –

कौशल, महत्वाकांक्षा, सपने अपने, कसौटी पर कसो।
जब तक कि दुर्बलता बने शक्ति,
कि अँधियारा उठे जगमग, कि अन्याय हरे नीति।

– ''लैविस कैरोल''

शैक्षिक उपलब्धि अंग्रेजी के दो शब्दों एकेडमिक एचीवमेंट से मिलकर बनी हुई है (academic achievement) अर्थात् इसका आशय है शैक्षिक उपलब्धि। अतः शैक्षिक उपलब्धि से आशय शिक्षा के क्षेत्र से प्राप्त परिणामों से होता है। इस प्रकार शैक्षिक उपलब्धि के अन्तर्गत शिक्षा से सम्बन्ध कारकों के परिणामें को सम्मिलित किया जाता है।

शैक्षिक उपलब्धि से आशय शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त परिणाम से है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा किये जाने वाले कक्षा–कक्ष की क्रिया होती है। शैक्षिक उपलब्धि विद्यार्थियों द्वारा पूरे सत्र में अधिगम की जाती है जो कि विभिन्न परीक्षाओं द्वारा ज्ञात की जाती है। शैक्षिक उपलब्धि को कक्षा–कक्ष का वातावरण, पारिवारिक उत्कंठा, सृजनात्मकता, बुद्धिलब्धि, माता–पिता का अपने बच्चों के प्रति व्यवहार, बाल्यावस्था एवं किशोरावस्था आदि घटकों से प्रभावित होती है, तथा स्वयं भी उपलब्धियों से प्रभावित होती है।

चार्ल्स ई. स्किनर – ''शैक्षिक कार्य का वह अन्तिम परिणाम ही शैक्षिक उपलब्धि है जो विद्यार्थी को सीखने के बारे में अन्तिम जानकारी प्रदान करती है''

हालक्वीस्ट के अनुसार – ''शैक्षिक कार्य का वह परिणाम है जो विद्यार्थियों को आगे कार्य करने के लिये प्रेरित एवं उत्साहित करती है''

सीताराम जायसवाल के अनुसार – ''शैक्षिक विद्यालय में बालक ने कितना ज्ञान प्राप्त किया है। इसका पता शैक्षिक उपलब्धिक द्वारा ही लग सकता है''

प्रेसी राबिन्सन व हरॉक्स के अनुसार – ''उपलब्धि परीक्षाओं का निर्माण मुख्य रूप से छात्रों को सीखने के स्वरूप और सीमा का मापन करने के लिये किया गया है''

गैरिसन व अन्य के अनुसार – ''उपलब्धि परीक्षा बालक की वर्तमान योग्यता या किसी विशिष्ठ विषय के क्षेत्र में उसके ज्ञान की सीमा का मूल्यांकन है''

1.2 समस्या का औचित्य :-

हमारे देश में युवाओं तथा विद्यार्थियों की एक बहुत बड़ी संस्था अपने केरियर का नियोजन उपयुक्त तथा बुद्धिमतापूर्ण ढ़ंग से क्यों नही कर पा रही है। अतः आवश्यक हो जाता है यह ज्ञात किया जाए कि विद्यार्थियों को इन प्रयासों के बाद भी उनकी केरियर के प्रति निर्णय क्षमता अथवा व्यावसायिक परिपक्वता क्या वास्तव में शैक्षिक उपलब्धि से प्रभावित होती है। जिसके निष्कर्ष से हम विद्यार्थियों के भविष्य को बनाने के लिए उनकी क्षमताओं का उचित उपयोग कर सके।

समस्या से उभरने वाले प्रश्न –

प्रश्न – 1. कैरियर का चुनाव कैसे किया जाए ?

प्रश्न – 2. कैरियर को सुनिश्चित करने वाले कारक कौन से होते है ?

प्रश्न – 3. कैरियर के चुनाव को कौन से कारक प्रभावित करते हैं ?

प्रश्न – 4. क्या कैरियर माता–पिता के द्वारा निश्चित किया जाना चाहिए या स्वयं के द्वारा ?

प्रश्न – 5. एक संगीतकार का बेटा या बेटी संगीत को ही व्यवसाय के रूप में क्यो चुनते हैं ?

प्रश्न – 6. फिल्मी सितारो के बच्चे सामान्यतया फिल्मों में ही अपना कैरियर क्यों आजमाते हैं ?

प्रश्न – 7. कुछ व्यवसाय अन्य की अपेक्षा प्रचलन में अधिक क्यों होते हैं ?

प्रश्न – 8. कुछ लोग अपने व्यवसाय से असन्तुष्ट होकर अन्य को क्यो अपनाना चाहते हैं ?

1.3 समस्या कथन :–

''विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव का अध्ययन''

1.4 शोध के उद्देश्य –

1. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के जीवनवृत्ति परिपक्वता का अध्ययन करना।
2. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षणिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिवक्ता एवं शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
4. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों का लिंग भेद के आधार पर जीवनवृत्ति परिपक्तवता का अध्ययन करना।

5. उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों का लिंग भेद के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि के अन्तर कर अध्ययन करना।

1.5 शोध की परिकल्पनाएं –

1. सरकारी व निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालय के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालय के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्ता मे कोई सार्थ अन्तर नहीं है।
3. सरकारी व निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालय के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. सरकारी व निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों की जीवनवृति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।
5. सरकारी व निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की छात्राओं की जीवनवृत्ति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

1.6 तकनीकी शब्दों का परिभाषीकरण –

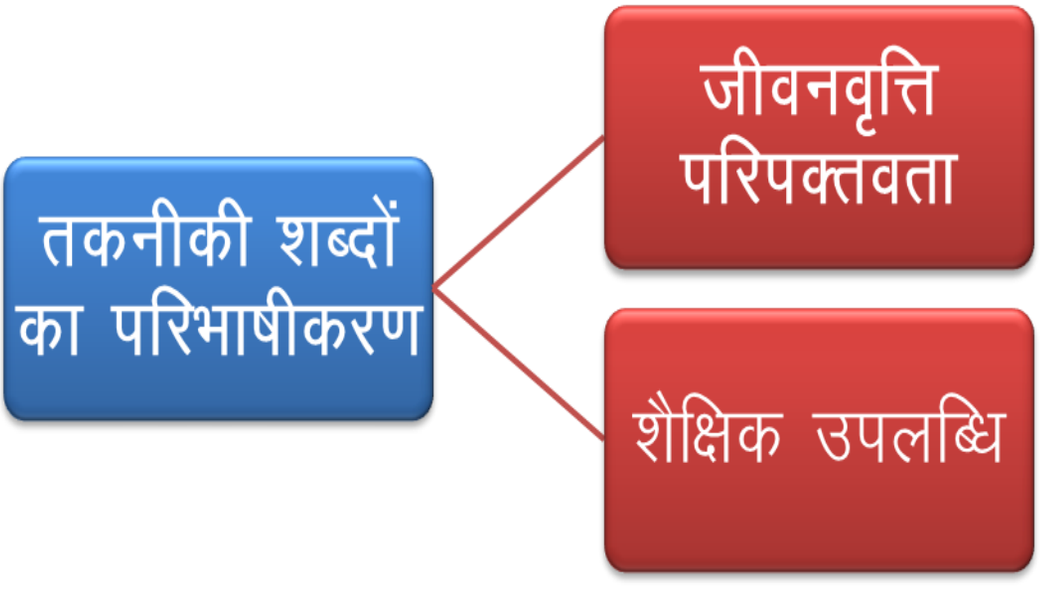

जीवनवृत्ति परिपक्तवता –

कैरियर एक व्यक्ति की आजीवन उन्नति को निर्धारित करने मे एक महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन करता है। कैरियर – ''जीवनयापन का आधार''

अर्थात् वह कार्य जो जीविकोपार्जन के लिए किया जाता है।

शैक्षिक उपलब्धि –

फ्रीमैन के अनुसार ''शैक्षिक उपलब्धि किसी विशेष समूह में अर्जित किया गया ज्ञान, बोध व कौशल होती हैं। शैक्षिक उपलब्धि में पाठ्यचर्या क्षेत्र में, जो अधिकांशतः स्कूलों में सामान्य है, मे छात्र अधिगम को माना हैं''।

1.7. जनसंख्या –

अध्ययन सम्बन्धी आंकड़े एकत्रित करने के लिए जयपुर जिले के दो विद्यालयों से विद्यार्थियों को लिया गया है। इस प्रकार जनसंख्या 60 है।

1.8 न्यादर्श का चयन –

न्यादर्श के रूप मे 60 छात्र–छात्राएं सरकारी तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थी हैं, जिनमें 30 छात्र छात्रा निजी विद्यालय के व 30 छात्र–छात्राएं सरकारी विद्यालय के है।

1.9 शोध के उपकरण –

स्वनिर्मित अभिवृत्त मापनी।

1.10 शोध के चर –

अनुसंधान को प्रभावित करने वाले दो महत्वपूर्ण चर होते हैं –

1. **स्वतंत्र चर** – इस अध्ययन में स्वतंत्र चर जीवनवृत्ति परिपक्वता है।
2. **आश्रित चर** – इस अनुसंधान मे आश्रित चर शैक्षिक उपलब्धि है।

1.11 सांख्यिकी –

प्रस्तुत शोध में शोधकर्ती ने प्राप्त आंकडों का विश्लेषण करने के लिये सांख्यिकी t टेस्ट का प्रयाग किया है।

1.12. शोध की विधि –

इस अनुसन्धान की शोध विधि हैं –

सर्वेक्षण विधि।

1.13 शोध की परिसीमाएं –

1. शोधककर्ती ने समय, श्रम व धन के व्यय का ध्यान में रखते हुए ही अपना शोध कार्य पूरा किया है।
2. प्रस्तुत अध्ययन मे न्यादर्श के रूप मे केवल 60 विद्यार्थियों का चयन किया गया है।
3. इस शोध मे केवल माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियो को ही लिया गया है।
4. इस अध्ययन मे केवल सर्वेक्षण विधि का ही प्रयोग किया गया है।
5. इस शोध मे जीवनवृत्ति परिपक्वता मापनी के आधार पर विद्यार्थियों की अभिवृत्ति एवं निर्णय क्षमता का अध्ययन किया गया है।
6. प्रस्तुत अध्ययन मे न्यादर्श के रूप मे केवल 15 से 18 वर्ष की आयु वर्ग के विद्यार्थियों को ही लिया गया है।
7. इस अध्ययन मे सांख्यिकी मे ''टी'' परीक्षण का प्रयोग किया गया है।
8. इस अध्ययन मे समस्या का क्षेत्र बहुत व्यापक हो सकता था लेकिन समय की सीमाओं को ध्यान मे रखते हुए सम्पूर्ण क्षेत्र का अध्ययन नही किया गया।

द्वितीय अध्याय
सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन

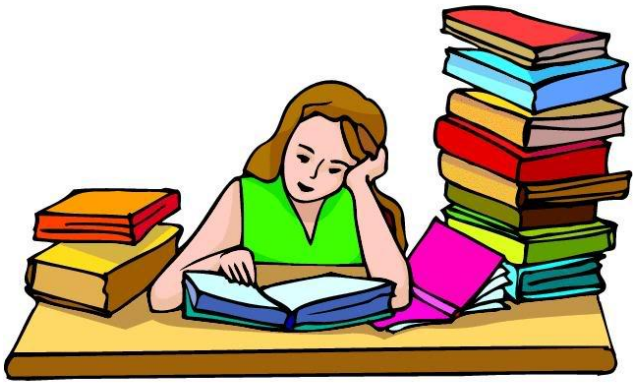

"किसी भी क्षेत्र का सम्बन्धित इतिहास उस आधार पर शिला के समान है, जिस पर सारा भावी कार्य एकत्रित होता है। यदि हम सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा के द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य प्रभावहीन व महत्वहीन होने की संभावना है अथवा यह पुनरावृत्ति भी हो सकती है।"

.....डब्ल्यू आर बोर्ग

द्वितीय अध्याय
सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन

2.1. प्रस्तावनाः–

अनुसंधान की प्रक्रिया में सम्बंधित साहित्य का अध्ययन करना, इस उपक्रम का एक वैज्ञानिक एवं महत्वपूर्ण चरण हैं क्योंकि व्यक्ति अपने अतीत से संचित एवं आलेखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान का सृजन करता है।

केवल मानव ही एक ऐसा प्राणी है जो सदियों से एकत्रित किये ज्ञान का लाभ उठा सकता है। व्यवहारिक आधार पर सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं में संचित रहता है। मानव की प्रत्येक पीढी उस संचित ज्ञान को प्राप्त कर, चिन्तन कर परिष्कृत कर अथवा पूर्ण व आंशिक परिवर्तन करके निरन्तर विकसित करने का प्रयास करती रहती है। किसी भी शोध कार्य की सफलता के लिए यह आवश्यक हैं कि शोधार्थी पुस्तकालय का उपयोग करें अपनी समस्या से सम्बंधित जितनी भी यथा सम्भव उपलब्ध पुस्तकें, ग्रंथ, पत्रिकाएँ गतवर्षों में एकत्रित किये गये अनुसंधानों के संतोषप्रद विवरण से अपने को पूर्वपरिचित करें। जिससे यह ज्ञात होता हैं कि समस्या से सम्बंधित किस पथ पर कार्य हो चुका हैं, उसमें शोध कौनसी प्रविधि प्रयुक्त की गई हैं कौनसा पथ समस्या का ऐसा हैं जिसका अभी तक अध्ययन नहीं किया गया है।

2.2. सम्बन्धित साहित्य का अर्थ एवं परिभाषाएँः–

सम्बंधित साहित्य का पुनरावलोकन दो शब्दों से मिलकर बना हैं अनुसंधान विधि में साहित्य शब्द किसी विषय के अनुसंधान के विषम क्षेत्र के ज्ञान की ओर

संकेत करता है। जिसके अन्तर्गत सैद्धान्तिक व्यावहारिक और शोध अध्ययन आते है। "पुनरावलोकन" शब्द का अर्थ, शोध के विशेष क्षेत्र के ज्ञान की व्यवस्था करना एवं ज्ञान को विस्तृत करके यह दिखाया जाता हैं कि उसके द्वारा किया गया अध्ययन इस क्षेत्र में एक योगदान होगा। सम्बंधित साहित्य से तात्पर्य अनुसंधान की समस्या से सम्बंधित उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोषों, पत्र–पत्रिकाओं, प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबंधों एवं अभिलेखों आदि से है। जिनके अध्ययन से अध्ययनकर्ता को अपनी समस्याओं के चयन परिकल्पनाओं के निर्माण अध्ययन की रूपरेखा तैयार करना तथा कार्य को आगे बढाने में सहायता मिलती है।

सम्बंधित साहित्य का अध्ययन ही शोधकर्ता को ज्ञान के उस शिखर तक ले जाता हैं, जहाँ पर वह अपने क्षेत्र की नवीन एवं विरोधी उपलब्धियों का परिचय प्राप्त करता है। प्रत्येक पीढी उस ज्ञान को प्राप्त कर उसको निरन्तर आगे की ओर अग्रसर करने का प्रयास करती है। इस प्रकार वह अपने से पहले अनुसन्धानकर्ता से सीखकर बाद वाले के बीच की कडी बनता है।

बेस्ट के अनुसार[1]:–

"व्यावहारिक दृष्टि से सारा मानव ज्ञान पुस्तकों एवं पुस्तकालयों से प्राप्त किया जा सकता है। अन्य जीवों के अतिरिक्त जो पीढी में नये सिरे से प्रारम्भ करते हैं, मानव समाज अपने प्राचीन अनुभवों को संग्रहित तथा सुरक्षित रखता है। ज्ञान के अथाह भण्डार में मानव का निरन्तर योगदान सभी क्षेत्रों में उसके विकास का आधार है।"

1,बोर्ग.आर. डब्ल्यू(1943) : रिसर्च मैथडोलॉजी. पृ.सं. 267-268

डब्ल्यू. आर. बोर्ग के अनुसार[2]:–

"किसी भी क्षेत्र का साहित्य उस आधारशिला के समान हैं जिस पर सम्पूर्ण भावी कार्य आधारित होता हैं, यदि संबंधित साहित्य का सर्वेक्षण द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य के प्रभावहीन एवं महत्वहीन होने की सम्भावना हैं अथवा यह पुनरावृत्त भी हो सकता है।"

गुड, वार तथा स्केट्स के अनुसारः– एक कुशल चिकित्सक के लिए यह आवश्यक हैं कि वह अपने क्षेत्र में हो रही औषधि सम्बंधी आधुनिक खोजों से परिचित होता रहे उसी प्रकार शिक्षा के जिज्ञासु छात्र को अनुसंधान के क्षेत्र से सम्बंधित सुचनाओं एवं खोजो से परिचित होना आवश्यक हैं।

2.3. सम्बंधित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्यः–

(1). यह अनुसंधान के लिए सिद्धान्त विचार व्याख्याएँ तथा परिकल्पनाएं प्रदान करता है। जो नयी समस्या के चयन में उपयोगी हो सकते है।

(2). यह अनुसंधान के क्षेत्र में यह जानकारी प्रदान करता हैं कि क्या और कितना हो चुका है।

(3). यह परिकल्पना के लिए साधन प्रदान करता हैं शोधकर्ता प्राप्त अध्ययन के आधार पर शोध परिकल्पनाएँ बना सकता है।

(4). चयनित समस्या के लिए किस विधि तथा प्रक्रिया का प्रयोग उपयुक्त होगा? तथा कौनसी सांख्यिकी का प्रयोग करना होगा? इन सब की जानकारी देता है।

---

[2] कार्टर वी.गुड. (1954) : मैथड्स ऑफ रिसर्च एजूकेशनल साइकोलॉजी. न्यूयार्क, पृष्ठ संख्या 140.

(5). समस्या के प्रभावीकरण, अवधाणाएँ सीमांकन तथा परिकल्पना निर्माण में सहायता करता है।

2.4 सम्बंधित साहित्य की सूचनाओं के स्त्रोतः–

सम्बंधित साहित्य की सूचनाओं के लिए पुस्तकालय तथा उसके अनेक साधनों से परिचित होना आवश्यक है। पुस्तकालय में उपलब्ध किसी भी शोध के क्षेत्र में विद्यमान सूचनाओं के स्त्रोत दो प्रकार के हो सकते थेंः–

1. लिखित
2. संकलित

(1). लिखितः–

लिखित स्त्रोतों में वे सभी पूर्व संकलित सामग्री सम्मिलित हैं जो प्रकाशित अथवा अप्रकाशित रूप से हमें प्राप्त होती है। लिखित सूचना के निम्न स्त्रोत हैं–

1. विद्वानों द्वारा लिखित ग्रन्थ– इन ग्रन्थों से हमें अनुसंधान के लिए उपयुक्त सामग्री मिल सकती है।
2. शिक्षा से संबंधित मासिक एवं पाक्षिक पत्र पत्रिकाऐं लेख प्रतिवेदन आदि।
3. सरकारी समाचार पत्र।
4. बुलेटिन।
5. शोध प्रबंध पीजी एवं पी.एच.डी.

(2). संकलितः–

संकलित स्त्रोतों में अनुसंधानकर्ता प्रत्यक्ष रूप से समस्या से सम्बंधित सामग्री का चयन करता है। अर्थात् इकट्ठा करता हैं तथा दूसरों को सहयोग भी इस विषय में प्राप्त करता हैं।

संबंधित साहित्य के स्त्रोत

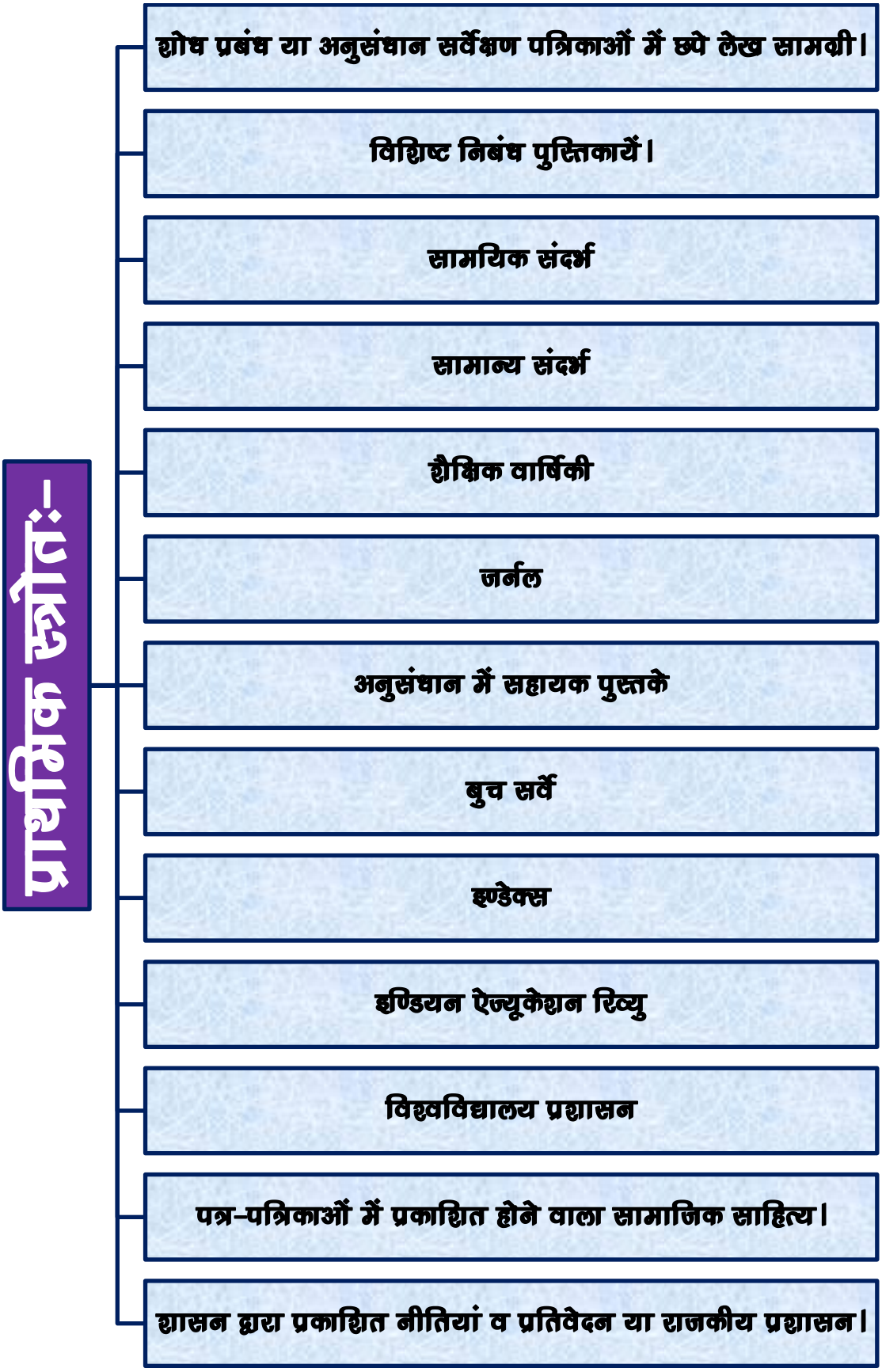

2–द्वितीयक स्त्रोतः–

- विश्व ज्ञानकोष
- समय–समय पर निकलने वाली पत्रिकायें
- शिक्षा सूची
- मोनाग्राफ, बुलेटीन
- लेख सार
- ग्रन्थ सूची तथा निर्देशिकाएँ
- बोर्ड पत्रिकाएँ
- शिक्षा अनुसंधान सूचनाएँ
- अन्तर्राष्ट्रीय प्रकाशन

2.5 अध्ययन से संबंधित अनुसंधानों का विवरण–

विदेश में हुए अनुसंधानः–

1. **लिन (1993)**– ने अपने अध्ययन में यह पाया कि प्रतिभाशाली विद्यार्थी जीवनवृत विकास मापन स्केल के आयाम जीवनवृत्ति अभिवृत्ति में अधिक सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है और प्रतिभाशाली विद्यार्थियों में जीवनवृत्ति परिपक्वता उनके नियमित सहपाठियों की तुलना में अधिक थी।

2. **ओफचस और गोजे 1963ः–**

"अध्यापक शिक्षा में छात्रों की व्यावसायिक अभिवृत्ति से संबंधित घटकों का अध्ययन।"

निष्कर्षः–

इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि उच्च नेतृत्व की प्रवृत्ति वाले छात्राध्यापकों में विद्यार्थियों के प्रति बहुत कम स्वीकारात्मक अभिवृत्ति पाई जाती है। उन छात्रों में अध्यापन व्यवसाय के प्रति अनुकूल अभिवृत्ति विकसित होती है जो अपने आपको शिक्षण में व्यस्त रखते है।

3. **रोजेवस्की (1994)**–ने यह पाया कि जीवनवृत्ति परिपक्वता के माप में निम्न आर्थिक स्तर वाले किशोरों ने निम्न अंक प्राप्त किये जिससे उन्होंने यह निष्कर्ष निकाला कि इसका कारण किशोरों को व्यवसाय की जानकारी कम थी, उच्च स्तरीय विद्यालय की तैयारियां एवं आदर्श प्रस्तुत करने वाले जीवनवृत्ति परिपक्वता के सांचे में खरे उतरे।

4. **पैरने (1998)** – ने 'बी' के स्केल में यह पाया कि अल्पसंख्यक विद्यार्थियों को व्यावसायिक परिपक्वता का पूर्ण जानकारी थी जबकि बहुसंख्यक विद्यार्थी 11 स्तर नीचे थे। उन्होंने यह सुझाव दिया कि पूर्ण पहचान सजगता की तरफ ले जा सकती है एवं कार्यक्षमता में बाधाएं निम्न जीवनवृत्ति परिपक्वता को दर्शाती है।

5. **केली एवं कोलेगो (1980)** के अनुसार जीवनवृत्ति सजगता एवं जीवनवृत्ति परिपक्वता के विभिन्न स्तर होते है लेकिन इन सभी स्तरों का समान बिन्दु, निर्णय लेना, पहचान का विकास एवं खोज है।

भारत में हुए अनुसंधानः–

1. **श्रीवास्तव, लक्ष्मी (1988) "विभिन्न स्तरों पर विभिन्न विषयों में अध्ययरत विद्यार्थियों के व्यावसायिक विकास पर शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तित्व तथा सामाजिक आर्थिक स्तर का प्रभाव।"**

निष्कर्ष–

1. शैक्षिक उपलब्धि तथा व्यावसायिक विकास के मध्य सार्थक संबंध है।
2. उपयुक्त व्यावसायिक विकास के लिए बर्हिमुखी व्यक्तित्व आवश्यक है।
3. व्यावसायिक विकास उच्च स्तर पर शिक्षा से संबंधित है।

2. **सक्सैना स्नेह (1998) "व्यावसायिक विकास की शैली में कक्षा स्तर तथा व्यावसायिक परिपक्वता के मध्य संबंध"**

निष्कर्षः–

1. कक्षा 12 के विद्यार्थी कक्षा 11 के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक व्यावसायिक रूप से परिपक्व थे।

2. कक्षा 11 के विद्यार्थी, कक्षा 10 के विद्यार्थियों की तुलना में अधिक व्यावसायिक परिपक्वता प्राप्त थे।

3. **चंदन, सुनन्दा (1990) "हाईस्कूल के छात्रों की करियर चयन प्रक्रिया के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन करना"**

निष्कर्षः–

1. बालक तथा बालिकाओं की व्यावसायिक परिपक्वता का भविष्य कथन करने में उपरोक्त चर भिन्नता प्रदर्शित करते है।
2. पारिवारिक वातावरण, आत्मप्रत्यय कैरियर चयन अभिवृत्ति के पूर्व कथन में एक–दूसरे की प्रभावित करते है।
3. पारिवारिक वातावरण लड़कों की तुलना में लड़कियों की कैरियर चयन अभिवृत्तियों पर विशेष प्रभाव डालता है।

4. **हरिकृष्ण, एम. (1992) "विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का उपलब्धि अभिप्रेरणा तथा सामाजिक आर्थिक स्तर के संदर्भ में इनके मध्य संबंध को जानना"**

निष्कर्षः–

1. बालिकाओं ने शैक्षिक उपलब्धि में बालकों की तुलना में उच्च मध्यमान प्रदर्शित किया।
2. शैक्षिक उपलब्धि सामाजिकता आर्थिक स्तर से सार्थक रूप से संबंधित है।
3. शैक्षिक उपलब्धि, उपलब्धि अभिप्रेरण से संबंधित नहीं पाई गई।

5. **लहरी, प्रतिभा (1994) "सामाजिक रूप से सम्पन्न एवं विपन बालकों का उनकी अध्ययन संबंधी आदतों तथा शैक्षिक उपलब्धि में संबंध"**

निष्कर्षः–

1. सामाजिक रूप से सम्पन्न एवं विपन्न बालकों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं था।
2. सामाजिक आर्थिक स्तर का दोनों समूहों के बालकों की शैक्षिक उपलब्धि पर कोई प्रभाव नहीं था।

6. **अखानी, पन्ना, राठी, नन्दा व जासौर मीरा (1999) "कामकाजी व गैरकामकाजी माताओं के बालकों की शैक्षिक निष्पति, अध्ययन की आदतों का तुलनात्मक अध्ययन"**

1. माताओं का व्यवसाय उनकी शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित नहीं करता है।
2. कामकाजी व गैरकामकाजी माताओं के बच्चों की शैक्षिक उपलब्धि समान पाई गई।

7. **मोहन सुन्दरम् के. (2000) उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व, वैज्ञानिक सृजनात्मकता तथा शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन"**

निष्कर्षः–

1. बालकों की तुलना में बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि उच्च थी।
2. ग्रामीण छात्रों की तुलना में शहरी छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि अधिक पाई गई।

8. **दता, उषा (2000) "रीवां (म.प्र.) के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के विद्यालयों की प्रभावशीलता तथा प्राइमरी स्तर की औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने वाले बालकों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन"**

निष्कर्षः–

1. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के बालक बालिकाओं की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर था। बालकों की उपलब्धि बालिकाओं की अपेक्षा उच्च थी।
2. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के प्राथमिक विद्यालयों में अध्ययनरत बालकों की उपलब्धि में कोई अन्तर नहीं पाया गया।
3. शहरी व ग्रामीण क्षेत्र की बालिकाओं की उपलब्धि में भी कोई अन्तर नहीं था।

9. **मनहस, सारिका व रजनी (2003) "माध्यमिक विद्यालय के विद्यार्थियों के शैक्षिक निष्पादन में ध्यान विस्तार तथा स्मृति की भूमिका"**

निष्कर्ष

1. अवधान तथा स्मृति के मध्य उच्च सकारात्मक संबंध पाया गया तथा दोनों ही प्रक्रियाएं शैक्षिक निष्पादन से सार्थक संबंध रखती है।
2. बौद्धिक स्तर से न तो शैक्षिक निष्पादन और न ही अधिगम प्रक्रिया सार्थक रूप से सहसंबंधित पाई गई।

10. **चौहान, यशपाल सिंह (2007) (एम.एड.) "उदयपुर जिले के प्राथमिक विद्यालयों में शिक्षण अधिगम सामग्री एवं उसका शैक्षिक निष्पति पर प्रभाव"**

उद्धेश्य :–

1. शिक्षण अधिगम सामग्री की विद्यालयों में उपलब्धता उपलब्धि एवं उसके स्वरूप का अध्ययन।

2. शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण एवं अध्ययन छात्रों की सहभागिता का अध्ययन करना।
3. शिक्षण अधिगम सामग्री के विद्यालय में रखरखाव की सुविधाओं का अध्ययन करना।

निष्कर्षः–

1. विद्यालयों में सभी विषयों की विषयवार शिक्षण सामग्री उपलब्ध है पर रखरखाब की व्यवस्था उपयुक्त नहीं है।
2. शिक्षण अधिगम सामग्री के निर्माण में छात्रों की सहभागिता रहती है तथा वे इसमें रूचि लेते है।
3. शिक्षण अधिगम सामग्री के शिक्षण के उपयोग से विद्यार्थियों के परीक्षा परिणाम में उन्नयन हुआ है।

11. **गाखर, एस.सी (2003)** ने सैकण्डरी स्तर के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर संवेगात्मक परिपक्वता तथा आत्मप्रत्यय के मध्य संबंध ज्ञात किया जिसके निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि शैक्षिक उपलब्धि तथा सांवेगिक परिपक्वता के मध्य नकारात्मक सहसंबंध पाया गया।

12. **गायकवाड़ एस. (1989) "कक्षा 10 के विद्यार्थियों की शैक्षिक एवं व्यावसायिक कैरियर से संबंधित निर्णय लेने की योग्यताओं को प्रभावित करने वाले कारकों तथा इन योग्यताओं पर व्यावसायिक निर्देशन के प्रभाव"**

निष्कर्षः–

1. विद्यार्थी जो बुद्धि में औसत से अधिक थे, उन्होंने शैक्षिक व व्यावसायिक करियर के संबंध में सुनिश्चिता प्रदर्शित की तथा जो औसत से भिन्न बुद्धिलब्धि वाले थे, वे आगामी अध्ययन के संदर्भ में निश्चित नहीं थे।

2. उच्च बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थी, निम्न बुद्धिलब्धि वाले विद्यार्थियों की तुलना में अधिक व्यावसायिक जानकारी रखते थे।
3. मनोवैज्ञानिक परीक्षण, व्यावसायिक जानकारी तथा सामूहिक निर्देशन कार्यक्रम विद्यार्थियों की शैक्षिक तथा व्यावसायिक उचित निर्णय लेने मे निश्चित रूप से सहायता करते है।

13. **कौर, शरणजीत (1992)** ने अपने अध्ययन में व्यावसायिक परिपक्वता के भविष्य सूचकों को ज्ञात करने तथा व्यावसायिक परिपक्वता की पूर्व सूचकों आत्मप्रत्यय आत्मनियंत्रण बिन्दु तथा लिंग की प्रभावोत्पादकता को ज्ञात करना था। न्यादर्श हेतु दिल्ली के उच्च माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा के 700 विद्यार्थियों का चयन किया। उन्होंने पाया कि आत्मप्रत्यय तथा आत्मनिंयत्रण करियर परिपक्वता के साथ भविष्यय सूचक है। जबकि उपरोक्त चरों के प्रभाव में कोई लिंग भेद नहीं पाया गया।

14. **शर्मा, अनुराधा व भार्गव एम. (1994)** ने अपने अध्ययन में विज्ञान तथा वाणिज्य समूह के कक्षा 12 के परिणामों के निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि विज्ञान वर्ग के विद्यार्थी वाणिज्य समूह की तुलना में अधिक व्यावसायिक परिपक्वता वाले थे। दोनों समूहों के छात्र–छात्राओं के कोई सार्थक अन्तर नहीं था।

15. **खन्ना, प्रिया (2005)** के अध्ययन का उद्धेश्य उच्च माध्यमिक स्तर की विज्ञान वर्ग की छात्राओं को करियर के प्रति जागरूकता को ज्ञात करना था जिसके निष्कर्ष से ज्ञात हुआ कि अधिकांश छात्राओं (89 प्रतिशत) की प्राथमिकता का क्षेत्र मेडिसन था जबकि 50 प्रतिशत से भी अधिक छात्राएं एम.बी.बी.एस. कोर्स में

प्रवेश का तरीका नहीं जानती थी। 32 प्रतिशत छात्राएं एम.बी.बी.एस. के उपरान्त रोजगार की उपलब्धता व अवसरों से अनभिज्ञ थी।

16. **श्री वास्तव, एल. (1988)** ने व्यावसायिक विकास पर शैक्षिक उपलब्धि, व्यक्तित्व व सामाजिक आर्थिक स्तर का अध्ययन किया और पाया कि व्यावसायिक विकास शैक्षिक उपलब्धि तथा सामाजिक आर्थिक स्तर से सकारात्मक संबंध रखता है। जबकि शिक्षा के स्तर तथा लिंग से उसका कोई संबंध नहीं था।

अतः शैक्षिक उपलब्धि के संदर्भ में साहित्य के पुनरावलोकन से ज्ञात होता है कि करियर के प्रति निर्णय क्षमता का प्रभाव उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर अभी तक नहीं किया गया है। अतः प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से उपरोक्त दोनों चरों के संबंध को ज्ञात किया जा सकेगा।

तृतीय अध्याय
शोध प्रारूप
एवं उपकरण

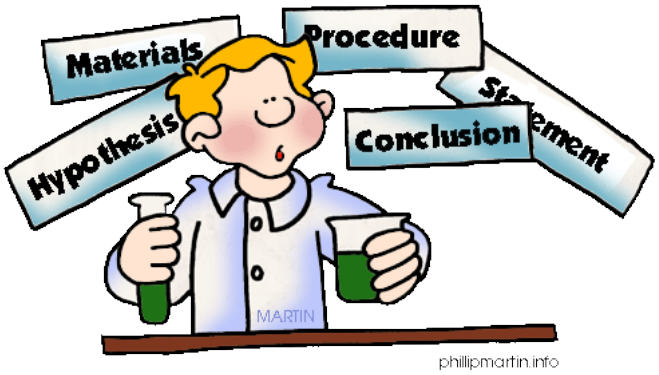

"किसी भी क्षेत्र का सम्बन्धित इतिहास उस आधार पर शिला के समान है, जिस पर सारा भावी कार्य एकत्रित होता है। यदि हम सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा के द्वारा इस नींव को दृढ़ नहीं कर लेते तो हमारे कार्य प्रभावहीन व महत्वहीन होने की संभावना है अथवा यह पुनरावृत्ति भी हो सकती है।"

.....डब्ल्यू आर बोर्ग

तृतीय अध्याय
शोध प्रारूप व उपकरण

3.1 प्रस्तावनाः–

शोध कार्य में संबंधित साहित्य का अध्ययन करने के बाद अगला चरण शोध हेतु उपयुक्त उपागमों का चयन करना है। अनुसंधानकर्ता को चयनित अनुसंधान उपागम के अन्तर्गत उपयुक्त वैज्ञानिक विधियों का चयन, वैज्ञानिक व वैद्य उपकरणों व प्रविधियों का चयन करना चाहिये क्योंकि अनुसंधान में विधि और उपकरण ही अनुसंधान के उपागम के दो मुख्य आयाम है। ये जितने अधिक वैज्ञानिक व प्रामाणिक है उतने ही हमारे निष्कर्ष सत्य एवं प्रमाणिक प्राप्त होंगे।

शिक्षा अनुसंधान की सफलता योजना व वैज्ञानिक क्रियाविधि पर अधिक निर्भर करती है। योजना व क्रियाविधि शिक्षा अनुसंधान का व्यावहारिक पक्ष है। जिसे निष्पक्ष रूप से वैज्ञानिक विधि के सिद्धान्तों के आधार पर निर्भर करना अपेक्षित है। अन्यथा शिक्षा शोध के द्वारा प्राप्त उपलब्धियां व निष्कर्ष गलत व भ्रामक व अवास्तविक हो सकते है। इन्हीं मापदण्डों को ध्यान में रखते हुए शोधकर्त्री ने शोध के अभिकल्प को हर दृष्टि से व्यवहारिक बनाने का प्रयास किया है।

वेस्ट के अनुसार–

"शोध कार्य में प्रयुक्त प्रक्रिया का विस्तृत वर्णन होना आवश्यक है। दत सामग्री के स्वरूप की पहचान दत्त सामग्री को एकत्र करने में प्रयुक्त साधनों द्वारा की जाती है। अतः इन साधनों का वर्णन एवं इनकी प्रामाणिकता का ज्ञान करने के लिए इनका मूल्यांकन आवश्यक है"

3.2 शोध विधिः–

वियर्सन – "शंकाओं के समाधान हेतु ऐसी विधि को जिसमें सभी चीज वास्तविक हो तथा सभी मनुष्य एक ही निष्कर्ष पर पहुँचे"

शोधकर्त्री को यदि अपना शोधकार्य सफल बनाना है तो उसी विधि उपकरण का चयन करना चाहिए जो अधिक वैज्ञानिक होने के साथ–साथ वैध हो। विधि ही वह प्रणाली है जिसमें एक निश्चित व्यवस्था के अनुसार अध्ययन किया जाता है।

विद्वानों ने अनेक प्रकार से अनुसंधान प्रदत्तों का संकलन करने, विश्लेषण व प्रतिपादन प्रस्तुत करने की विधियों का वर्गीकरण किया है। सामान्यतः वर्गीकरण निम्नलिखित है–

"यदि अनुसंधानकर्ता अपनी विधि की व्याख्या स्पष्ट रूप से नहीं कर सकता है तो परिणामों में अत्यधिक अनिश्चितता और असामान्य होने की संभावना होती है"

शोध में प्रयुक्त विधिः–

प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है।

सर्वेक्षण विधिः–

सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत अनुसंधान के विषय के स्तर, वर्तमान दशा का विश्लेषण, स्पष्टीकरण और विज्ञप्तिकरण किया जाता है।

सर्वेक्षण शब्द अंग्रेजी के SURVEY शब्द का हिन्दी रूपान्तरण है। Survey दो शब्दों Sur व Vey से मिलकर बना है। इसका शाब्दिक अर्थ है over तथा over का अर्थ to Look होता है। अतः इसका शाब्दिक अर्थ किसी घटना को ऊपर से देखना है। इससे तात्पर्य यही है कि किसी घटना, स्थिति या मूल्यों के बारे में जांच करना ही सर्वेक्षण है और अनुसंधान हेतु तथ्यों का अध्ययन एवं विशुद्ध व्याख्या करने वाली विधि ही सर्वेक्षण विधि कहलाती है।

परिभाषाएंः–

1. **बेवस्टर शब्द कोषः–**

   वास्तविक जानकारी प्राप्त करने के लिए किया गया आलोचनात्मक निरीक्षण ही सर्वेक्षण है।

2. **ट्रेवर के अनुसारः–**

   सर्वेक्षण विधि वर्तमान कार्यो की प्रकृति को निश्चित करने की विधि है।

अतः सर्वेक्षण विधि वह है जो शोधकर्त्री की अपने निश्चित लक्ष्य तक पहुंचाने हेतु रणनीति बनाने, आंकड़ों का एकत्रीकरण करने व भावी अनुसंधान के लिए मार्ग प्रशास्त करती है। इस विधि में प्रतिदर्श चयन को विशेष महत्व दिया जाता है।

सर्वेक्षण के उद्धेश्यः–

1. सूचनाओं को संकलित करना।
2. किसी विशिष्ट कारक के अस्तित्व का पता लगाना।
3. किसी व्यवहार तथा घटना का पूर्वानुमान लगाना।
4. दो चरों के बीच पारस्परिक संबंध का पता लगाना।

सर्वेक्षण विधि की विशेषताएंः–

सर्वेक्षण विधि वर्तमान काल में विद्यमान तथ्यों का अध्ययन, वर्णन तथा व्याख्या करने का उतम साधन है। सर्वेक्षण विधि की निम्नलिखित विशेषताएं हैः–

1. व्यापक तथा विस्तृत अध्ययन।
2. प्रत्यक्ष तथा निकट सम्पक्र का अवसर।
3. वर्तमान परिस्थितियों का निरीक्षण तथा विवेचन।
4. परिशुद्ध वस्तुपरक व विश्वसनीय आंकड़ों का संकलन।
5. विशिष्ट एवं कल्पनापूर्ण नियोजन।
6. स्थानीय समस्याओं के समाधान हेतु उपयोगी।

सर्वेक्षण विधि का महत्वः–

1. यह वर्तमान प्रकृति को निर्धारित करती है तथा वर्तमान व्यावहारिक समस्याओं का निराकरण करती है।

2. इसमें सूचनाओं का संकलन होता है।

3. किसी विशिष्ट कारक के अस्तित्व का पता लगाया जा सकता है।

4. इस विधि द्वारा किसी व्यवहार अथवा घटना का पूर्वामान लगाया जा सकता है।

5. यह ज्ञान के विकास में योग देती है।

6. यह पृष्ठभूमि के विचार और तत्व प्रस्तुत करती है जिनसे कई कारणात्मक संबंधों के शोधित प्रयोगात्मक एंव नियंत्रित अध्ययन किए जा सकते है।

7. यह सभी विकासों के क्रम की ओर संकेत करती है।

सर्वेक्षण विधि के सोपानः–

सर्वेक्षण को स्पष्ट बनाने के लिए उसके आयोजन के प्रमुख सोपान निम्नलिखित है–

1. समस्या की व्याख्या
2. उद्धेश्य का निर्धारण
3. अध्ययन क्षेत्र परिभाषित करना।
4. उपकरण एवं प्रविधियों का चुनाव।
5. प्रतिदर्श का चयन
6. समग्र सूची का निर्माण
7. दत्त संकलन एवं विश्लेषण

सर्वेक्षण विधि के लाभः–

सर्वेक्षण विधि के लाभ निम्नलिखित है–

1. सर्वेक्षण में किसी विषय, घटना या वस्तु की वर्तमान दशा का वर्णन होता है तथा इसमें अच्छाई और बुराई का भी विवेचन होता है और सुधार व संशोधन के सुझाव भी दिये जाते है।

2. सर्वेक्षण में बहुत से लोगों की राय जानी जाती है। इसी कारण सर्वेक्षण से प्राप्त निष्कर्ष अधिक मान्य एवं विश्वसनीय माने जाते है। यह विधि वैज्ञानिक विधि के अधिक निकट है इस विधि में अनुसंधानकर्ता अपने निष्कर्ष, आंकड़ों एवं तथ्यों के आधार पर निकालता है न कि अनुमान या वृद्धि से।

3. ये सर्वेक्षण मानव व्यवहार के बहुमूल्य ज्ञान को प्राप्त करने का एक उत्तम तथा प्रत्यक्ष साधन है। ये सर्वेक्षण विभिन्न सामाजिक एवं शैक्षणिक कार्यक्रमों की योजना बनाने में बड़े सहायक होते है।

अनेकानेक तात्कालिक समस्याओं पर उचित सूचना तथा तथ्य इसी के माध्यम से प्राप्त किए जा सकते है। विभिन्न उपकल्पनाओं का सत्यापन तथा सिद्धान्तों का परीक्षण भी इस विधि द्वारा संभव है।

सर्वेक्षण विधि की सीमाएंः–

सर्वेक्षण विधि के लाभ के साथ–साथ कुछ सीमाएं भी है जो निम्न प्रकार है–

1. सर्वेक्षण प्रायः असम्बद्ध एवं बिखरे होते है, अतः इन्हें पूर्ण रूप से संकलित करके किसी सिद्धान्त का निर्माण नहीं किया जा सकता है।

2. सर्वेक्षण विधि से समाज के एक अंश का अवलोकन हो पाता है। इससे समस्त सत्य को समझना मुश्किल है।

3. सर्वेक्षण विधि से ऐसी सूचनाएं प्राप्त नहीं होती, जिनसे तथ्यों का गहराई से अध्ययन हो सके।

4. सर्वेक्षण में अभ्यार्थियों को गलत या सामाजिक कुछ से मान्य उत्तर देने की सम्भावना होती है।

5. सर्वेक्षण विधि में शोधकर्ता को अधिक सतक्र, प्रशिक्षित तथा शोध क्षेत्र का जानकार होना चाहिए।

यद्यपि सर्वेक्षण विधि में अनेक त्रुटियां व कमियां है, फिर भी अनुसंधान के क्षेत्र में इसका अपना अलग महत्व है। अनेकानेक तात्कालिक समस्याओं पर उचित सूचना तथा तथ्य इसी के माध्यम से प्राप्त किये जा सकते है। विभिन्न उपकल्पनाओं का सत्यापन तथा सिद्धान्तों का परीक्षण भी इस विधि द्वारा संभव है।

3.3 चरः–

चर से तात्पर्य वस्तु, घटना अथवा चीज के उन गुणों से होता है, जिन्हें मापा जा सकता है।

चर की परिभाषाएंः–

1. डी. एमैटो के अनुसारः– "किसी प्राणी, वस्तु या चीज का मापने योग्य गुणों को चर कहा जाता है।"

2. गैरेट के अनुसारः–"चर वह लक्षण है, जिसकी मात्रा में परिवर्तन होता है और वह परिवर्तन किसी माप या आयाम पर होता है।"

चर के प्रकारः–

चरों की प्रकृति गुणात्मक न होकर परिणामात्मक होती है। चर दो प्रकार के होते हैः–

1. स्वतंत्र चर

2. आश्रित चर

1. स्वतंत्र चरः–

स्वतंत्र चर किसी वातावरण में क्रियाशील होता है और व्यवहार को प्रभावित करता है। स्वतंत्र चर का मापन किया जाता है और प्रयोग द्वारा उसके प्रभाव का अध्ययन किया जाता है तथा आश्रित चर से सह–संबंध स्थापित किया जाता है।

2. आश्रित चरः–

किसी स्वतंत्र चर का प्रभाव जिस चर के आधार पर किया जाता है, उसे आश्रित चर कहते हैं जिसका मूल्य स्वतंत्र चर के मूल्य पर आधारित है।

शोध में प्रयुक्त चरः–

1. स्वतंत्र चर :–

इस अध्ययन में स्वतंत्र चर के रूप में जीवनवृत्ति परिपक्वता का प्रयोग किया गया है।

2. आश्रित चर–

इस अनुसंधान में आश्रित चर के रूप में शैक्षिक उपलब्धि का प्रयोग किया गया है।

3.4 न्यादर्शः–

अपने शोध अध्ययन हेतु विधि तथा उपकरण निर्धारित करने के पश्चात् शोधकर्ता न्यादर्श का चयन करता है।

किसी वैज्ञानिक अध्ययन के लिए उस समस्या से संबंधित कुल व्यक्तियों में से प्रतिनिधित्व करने वाले कुछ व्यक्तियों को चुन लिया जाता है और उनसे प्राप्त

होने वाली जानकारी को समस्त समूह के लिए सही माना जाता है तो उन व्यक्तियों का न्यादर्श कहा जाता है और उनको चुनने की पद्धति को न्यादर्श ग्रहण पद्धति कहा जाता है।

परिभाषाएंः–

गुडे व हॉट के अनुसारः–

"एक निर्देशन जैसा कि इसके नाम से ही स्पष्ट होता है एक विस्तृत समूह का एक लघुतर प्रतिनिधि है।"

पी.वी. यंग के शब्दों मेंः–

"एक सांख्यिकीय निदर्शन सम्पूर्ण समूह अथवा योग का एक लघुकृत आकार का चित्र है जिससे कि निर्देशन लिया गया है "

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि व्यक्तियों या वस्तुओं के विस्तृत समूह का एक छोटे आकार का प्रतिनिधि ही प्रतिदर्श है जिसके आधार पर सम्पूर्ण जनंसख्या के लिए विश्वसनीय और वैद्य निष्कर्ष निकाले जाते है।

न्यादर्श की आवश्यकताः–

1. समय की बचत होती है।
2. मितव्ययी विधि है।
3. अत्यधिक सत्यता का ज्ञान होता है।
4. सम्पूर्ण जनसंख्या का अध्ययन संभव है।
5. विश्वसनीयता की संभावना अधिक रहती है।
6. प्रायोगिक अध्ययन में उपयुक्तता।

न्यादर्श के उद्धेश्यः–

1. अल्प समय में परिणाम जानने की क्षमता प्रदान करना।
2. कम खर्च पर आवश्यक सूचना प्रदान करना।
3. समस्त समष्टि के स्थान पर कुछ गिनी चुनी इकाईयों का ही अध्ययन करना।
4. प्रतिचयन प्रसारण का कम करना।
5. निष्कर्ष में परिशुद्धता, यर्थाथता।

न्यादर्श चयन की विधियांः–

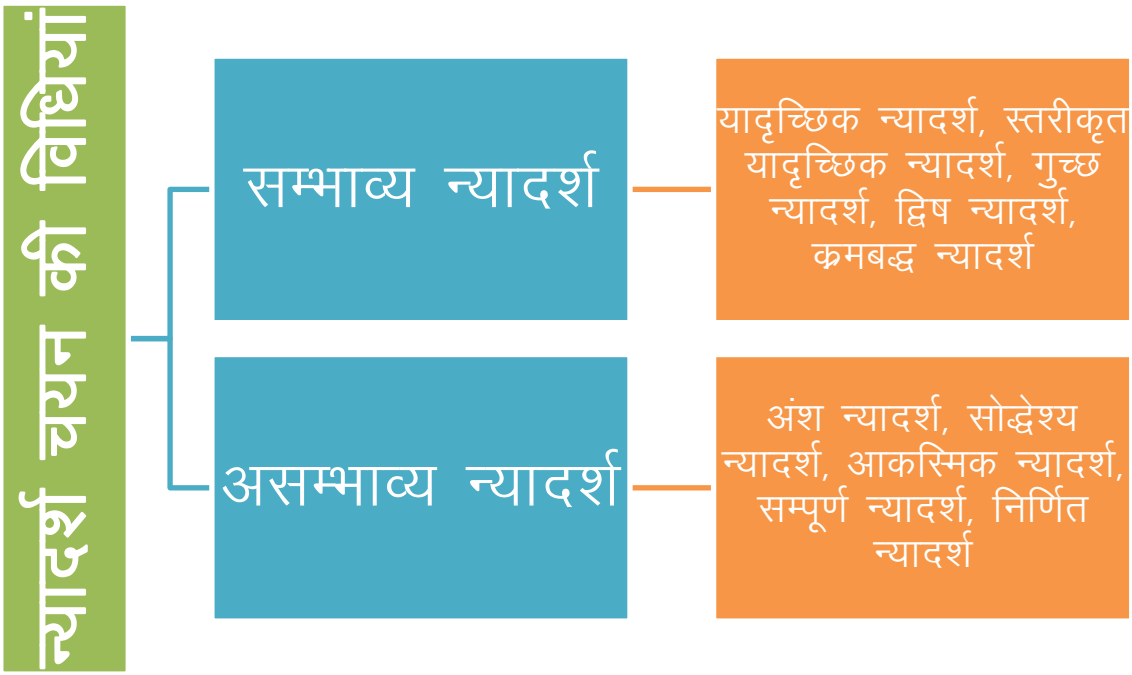

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श विधि का चयनः–

प्रस्तुत शोध समस्या के लिए न्यादर्श के चुनाव हेतु यादृच्छिक (देव निदर्शन) विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि के प्रयोग द्वारा प्रत्येक इकाई के प्रतिदर्श आने की संभावना बराबर होती है। प्रतिदर्श चुनते समय सम्पूर्ण इकाई की

सूची बना लेते है। फिर इकाईयों को बिना किसी पक्षपात के चुन लिया जाता है। ये सम्पूर्ण इकाईयां जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करती है।

प्रस्तुत शोध में न्यादर्श हेतु जयपुर जिले के माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों का चयन किया गया है।

प्रस्तुत शोध में किया गया न्यादर्शः–

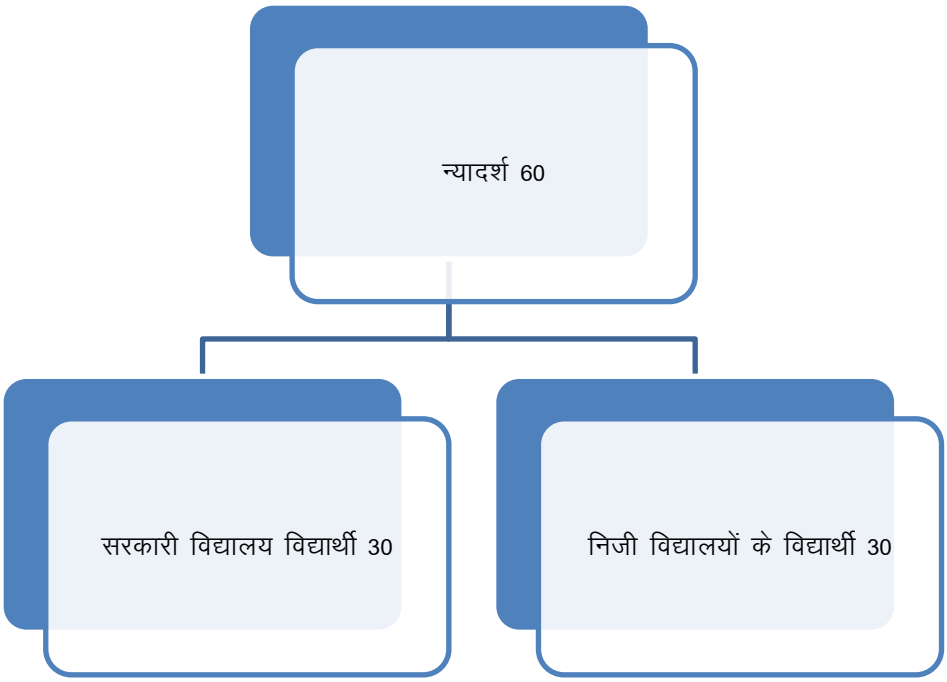

3.5 उपकरणः–

प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान कार्य में दत्तों के संकलन हेतु बहुत से साधनों की आवश्कयता होती है इन्हें उपकरण कहते है।

जॉन बेस्ट के अनुसारः–

"जिस प्रकार बढ़ई की औजार पेटी में प्रत्येक औजार का भिन्न प्रयोग होता है। उसी प्रकार प्रत्येक अनुसंधान में उपकरण का किसी विशेष परिस्थितियों में निश्चित प्रयोग होता है"

शोध में उपकरणों के प्रकारः–

1. मानवीकृत उपकरणः–

इनका निर्माण मानवीय व्यवहार के कतिपय पक्षों अथवा आन्तरिक गुणों का मापन करने के लिए करते है। ये पूर्वानिर्मित विश्वसनीय व वैद्य होते है।

2. अप्रमापीकृत उपकरणः–

यह शोधकर्त्री द्वारा समस्या के अनुसार निर्मित किया जाता है। यह उपकरण निर्माण के बाद वैद्य व विश्वसनीयता के पक्ष में जांचे जाते है।

प्रस्तुत लघुशोध में प्रयुक्त उपकरणः–

प्रस्तुत शोध अध्ययन के लिए शोधकत्री द्वारा स्वनिर्मित अभिवृत्ति मापनी परीक्षण बनाया गया है।

3.6 प्रश्नावलीः–

किसी भी अनुसंधान में आंकड़ों के संकलन करने में यह महत्वपूर्ण उपकरण है। इसमें अनेक प्रश्नों का समूह होता है। प्रश्नावली प्रश्नों की वह सूची है जो अध्ययन समस्या के संबंध में बनायी जाती है और जिसकी सहायता से अध्ययन इकाईयों से तथ्यों का संकलन करके समस्या का पूर्ण किया जाता है।

परिभाषाएंः–

वान डैलेन के अनुसार–

"प्रश्नावली एक उपकरण है जो शिक्षा के क्षेत्र में कार्य करने वालों के द्वारा वर्तमान परिस्थितियों व क्रियाओं के बारे में तथा अभिवृत्ति व मत को जानने के लिए व्यापक रूप मे प्रयोग किया जाता है।"

गुड व हैट के अनुसारः–

"प्रश्नावली एक प्रकार का उतर प्राप्त करने का साधन है जिसका उतर ऐसा है कि उतरदाता स्वयं उसकी पूर्ति करता है।"

प्रश्नावली के लाभः–

अन्य मनोवैज्ञानिक उपकरणों की तुलना में प्रश्नावली में निम्न गुणों के कारण इसका प्रयोग बहुतायत से किया जाता है।

1. विस्तृत जनंसख्या का अध्ययन।
2. निम्नतम व्यव।
3. न्यूनतमक समय।
4. स्वतंत्र व पक्षपात रहित उत्तर।
5. अनुसंधानकर्ता की तटस्थता।
6. स्वयं प्रशासित।
7. सूचनादाता के सामान्य ज्ञान में वृद्धि।
8. अनावश्यक सूचनाओं से बचाव।

प्रश्नावली की सीमाएंः–

प्रश्नावली में कुछ दोष भी विद्यमान है जो उसकी विश्वसनीयता व वैद्यता को प्रभावित करते है–

1. अनुसंधानकर्ता का पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण।
2. निर्देशन के लिए अनुपयोगी।
3. गहन व विस्तृत अध्ययन के लिए अनुपयोगी।
4. प्रत्येक स्तर के अनुरूप प्रश्नों की रचना असंभव।
5. विभिन्न व्यावहारिक कठिनाईयां।

3.7 प्रशासनः–

प्रस्तुत शोध जीवनवृत्ति परिपक्वता का विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का एक प्रकार है। परीक्षण से संबंधित निर्देश परीक्षण को परीक्षण से पूर्व सभी निर्देशों को सविस्तार से समझा देना चाहिए जो कि परीक्षण में दिये गये पूरे परीक्षण को एक ही बार में पूरा करना चाहिए।

अंकनः–

शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों की अभिवृत्ति मापनी में प्रत्येक आयाम से संबंधित 20–20 प्रश्न है तथा कुल 40 प्रश्न है। धनात्मक प्रश्न में हाँ के लिए 1 अंक है तथा नहीं के लिए 0 अंक है तथा ऋणात्मक प्रश्न में नहीं के लिए एक अंक है तथा हाँ के लिए 0 है।

परीक्षण विवरणः–

प्रस्तुत लघुशोध में उपकरण स्वनिर्मित प्रश्नावली है। यह परीक्षण चार पृष्ठों का है। प्रथम पृष्ठ पर परीक्षण से संबंधित निर्देश दिये गये है अन्दर के तीन पृष्ठों पर 40 प्रश्न दिये गये है जो दो क्षेत्रों (जीवनवृत्ति परिपक्वता व शैक्षिक उपलब्धि) से संबंधित है। प्रत्येक पृष्ठ पर स्कूल से संबंधित कुछ कथन दिए गए है, जिनके सामने दो खाने ( ) बने है। प्रत्येक कथन का ध्यान से पढ़कर जिसका उत्तर हाँ के द्वारा देना चाहते है उसके सामने हॉ के खाने में (√) का निशान तथा जिसका उतर नहीं में देना है तो नहीं वाले खाने में (√) का निशान लगावें। समय की कोई सीमा नहीं है।

क्र.सं.	आयाम	हॉ उत्तर वाले	ना उत्तर वाले
1	जीवनवृत्ति परिपक्वता	2,3,9,12,16,21,22,33,35,36,39	1,4,7,10,13,15,24,25,29,31,
2	शैक्षिक उपलब्धि	6,8,,11,17,23,28,30,34,37,38,40	5,14,18,19,20,16,27,32

3.8 अध्ययन में प्रयुक्त सांख्यिकीः-

अनुसंधान एवं शोधकार्य में सांख्यिकी की विधियों का महत्वपूर्ण स्थान होता है। प्राप्त तथ्यों की संख्या वैज्ञानिक विधि में विश्लेषण कर प्राप्त किये गये निष्कर्ष विश्वसनीय तथा अर्थपूर्ण एवं प्रमाणित होते है।

1. **मध्यमान** (M)

केन्द्रीय प्रवृत्ति में मध्यमान सबसे अधिक उपयोगी व प्रयोग में आने वाला औसत है। इसे औसत के नाम से भी पुकारा जाता है। मध्यम आवृत्ति वितरण आवृत्ति मानक पर वह बिन्दु है जो आवृत्ति के योग में आवृत्तियों की संख्या का भाग देने पर प्राप्त भागफल के बराबर हाता है।

मध्यमान (Mean) ज्ञात करने का सूत्र

$$M = \frac{\Sigma X}{N}$$

M = Mean (मध्यमान)

ΣX = संख्याओं का कुल योग

N = कूल संख्याएं

2. **प्रमाणिक विचलन** (SD)

प्रामाणिक विचलन वह माप है जो मध्यमान से प्राप्तांकों का छितराव ज्ञात करता है। इसमें मध्यमान से प्राप्त प्रत्येक पद का विचलन ज्ञात किया जाता है। उनके वर्ग मालूम करके औसत निकाल लिया जाता है। औसत का वर्गमूल ज्ञात कर लिया जाता है। जिसे प्रमाप विचलन से व्यक्त किया

जाता है। यह विचलन प्रामाणिक विचलन है। जिसका सांख्यिकी में सर्वाधिक प्रयोग होता है।

S.D = $\sqrt{\frac{\Sigma d2}{N}}$

Σ = कुल योग

d^2 = समान्तर माध्य से प्राप्त अंतरों के वर्ग का योग

N = कुल विद्यार्थियों की संख्या

3. **टी अनुपातः–**

जब हम दो बड़े समूहों से संबंधित मध्यमानों का तुलनात्मक अध्ययन करते है तब दोनों समूहों में सांख्यिकी दृष्टि से सार्थक रूप में भिन्नता जानने के लिए टी अनुपात का प्रयोग करते है।

सूत्र t = $\frac{M_1 - M_2}{\sqrt{\frac{{\sigma_1}^2}{n_1} + \frac{{\sigma_2}^2}{n_2}}}$

यहाँ

t = टी मूल्य

M_1 = पहले समूह का मध्यमान

M_2 = द्वितीय समूह का मध्यमान

$\boldsymbol{\sigma}_1$ = प्रथम समूह का प्रामाणिक विचलन

$\boldsymbol{\sigma}_2$ = द्वितीय समूह का प्रामाणिक विचलन

N_1 = प्रथम समूह की न्यादर्श की संख्या

N_2 = द्वितीय समूह की न्यादर्श की संख्या

4. **प्रतिशतः—**

प्रतिशत व्यवहार और विचार तथा अन्य विशेषताओं को सही प्रकार बताती है।

सूत्र — $\frac{\text{प्राप्तांक}}{\text{कुल योग}} \times 100$

प्रतिशत = %

चतुर्थ अध्याय

आंकडों का वर्गीकरण, विश्लेषण एवं व्याख्या

"क्रमबद्ध विश्लेषण का कार्य ठोस बौद्धिक भवन के विचारों के एक संगठन का निर्माण करना है जो कि एकत्रित तथ्यों को उनके उचित स्थान तथा सम्बन्धों में प्रस्तावित करने में सहायक होगा ताकि सामान्य निष्कर्षों को निकाला जा सके।"

.....पी.वी. यंग

चतुर्थ अध्याय

आंकड़ों का वर्गीकरण, विश्लेशण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना–

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या करना उनके व्यवस्थापन का एक महत्वपूर्ण कार्य है। अनुसंधान के अन्तर्गत आंकड़ों के संकलन सारणीयन तथा सांख्यिकी विधियों के प्रयोग के बाद प्राप्त निष्कर्षो का विश्लेषण एवं उनकी व्याख्या का महत्वपूर्ण स्थान है। इस प्रक्रिया में प्राप्त आंकड़ों को इस प्रकार व्यवस्थित किया जाता है कि वह इस समस्या से संबंधित वांछित परिणामों को प्रस्तुत कर सके। प्रदत्तों के वर्गीकरण व विश्लेषण के लिए सारणीयन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके अन्तर्गत प्राप्त आंकड़ों को क्रमबद्ध बोधगम्य व सरल रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

परिभाषा–

डब्ल्यु कुक के अनुसारः–

"वैज्ञानिक विश्लेषण अध्ययन के तथ्यों, परिणामों तथा वैज्ञानिक ज्ञान के संबंधों की खोज करता है"

डॉ. एलहेस के अनुसारः–

"आंकड़ों को उनकी रूपता और समानता के अनुरूप समूह अथवा वर्गो में व्यवस्थित करने की प्रक्रिया को लाक्षणिक रूप में वर्गीकरण कहा जाता है"

उपर्युक्त परिभाषा से स्पष्ट है कि अनुसंधान में तथ्यों के वर्गीकरण व सारणीयन से सभी तथ्यों को एक क्रमबद्ध संक्षिप्त व व्यवस्थित स्वरूप प्रदान किया जाता है। इसके लिए सांख्यिकी प्रक्रियाएं प्रयोग करनी पड़ती है। यह सांख्यिकी प्रक्रियाएं वर्गीकरण व सारणीयन अन्तिम स्वरूप में पूर्ण की जाती है।

आंकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या शोध सक्रिय आगमन व निगमन तक्र के योग को दर्शाता है। आंकड़ों को उप समूह में विभाजित कर उनका विश्लेषण इस प्रकार किया जाता है कि दी गई परिकल्पना स्वीकृत या अस्वीकृत हो सके अन्तिम परिणाम नए सिद्धान्त की खोज या स्पष्टीकरण होता है।

4.2 सारणीयन का अर्थ व परिभाषाः-

किसी भी शोध कार्य में संकलित तथ्यों का वैज्ञानिक ढंग से एक सारणी के अन्तर्गत प्रदर्शित करना ही सारणीयन कहलाता है। सारणीयन के द्वारा अंकों से यथोचित निष्कर्ष निकाले जा सकते है। यहा तक कि इसके द्वारा गुणात्मक रूप से प्रस्तुत करने की एक प्रणाली है, यह संकलित तथ्यों को बोधगम्य व व्यवस्थित बनाती है।

परिभाषाः–

एल्हसं के अनुसार –

"विस्तृत अर्थ में सारणीयन तथ्यों के स्तम्भों तथा पंक्तियों को क्रमबद्ध रूप में व्यवस्थित करता है"

प्रदत्तों को स्पष्ट व बोधगम्य बनाने के लिए सारणी द्वारा आंकड़ों को विभिन्न स्तम्भों व पंक्तियों में प्रस्तुत किया जाता है जिससे उनमें सरलता व स्पष्टता आती है।

सारणीयन के उद्धेश्यः–

1. तथ्यों को संक्षिप्त रूप प्रदान करना।
2. तथ्यों को तुलनीय बनाना।
3. तथ्यों को स्पष्ट तथा बोधगम्य बनाना।
4. सांख्यिकी विवेचन में सहायक।
5. विशेषताओं का प्रदर्शन करना।

उत्तम सारणी के गुणः–

1. स्पष्टता तथा सरलताः–

एक उत्तम सारणी का स्पष्ट तथा सरल होना परम आवश्यक है। जिससे हम आवश्यक समंकों को तुरन्त खोज सके।

2. समुचित आकारः–

एक स्तरीय सारणी का आकार समुचित होना चाहिए। आकार न बड़ा न अधिक छोटा होना चाहिए।

3. आकर्षकताः–

एक सारणी के आकर्षक होने के लिए उसके खानों का समानुपातिक होना, संख्याओं के लिखने का ढंग, स्वच्छता तथा लेख की सुन्दरता आदि आवश्यक तत्व है।

4. वैज्ञानिकताः–

इसका आशय यह है कि सारणी निर्मित करते समय वैज्ञानिक माध्यम अपनाना चाहिए न कि मनमाना ढंग क्योंकि वैज्ञानिक विधि से निर्मित सारणी निश्चय ही उपयोगी होती है।

4.2.3 सारणी की सीमाएंः–

1. सारणी में मात्र समंक होते है उनका विवरण नहीं होता है अतः केवल उन्हीं तथ्यों से सांख्यिकीय विवेचन नहीं किया जा सकता है।
2. सारणियों को समझने के लिए अंकों का उच्च ज्ञान होना आवश्यक है। इसलिए साधारण ज्ञान रखने वालों के लिए सारणी के अंकों के मेल को समझना बहुत कठिन है।

अतः प्रत्येक परिकल्पना को ध्यान में रखते हुए विभिन्न तथ्यों को सारणीबद्ध किया है। तत्पश्चात् उसकी व्याख्या एवं विश्लेशण किया गया है।

4.3 तथ्यों का प्रस्तुतीकरण, सारणीयन एवं विश्लेषण

तालिका संख्या 4.1

परिकल्पना–1

"सरकारी व निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।"

क्र. सं.	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रामाणिक विचलन (S.D.)	t मूल्य	स्वीकृत / अस्वीकृत
1.	स्रकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	30	27.16	3.94	1.21	स्वीकृत
2.	निजी विद्यालयों के विद्यार्थी	30	29.96	2.68		

$df = (N_1 + N_2 - 2)$ $df = (30 + 30 - 2) = 58$

df = 58 के लिए t का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर मान 2.00

0.01 स्तर पर मान 2.66

विश्लेषणः–

तालिका 4.1 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता एवं शैक्षिक

उपलब्धि के प्रति मध्यमान क्रमशः 27.16 एवं 29.96, प्रमाणिक विचलन 3.94 एवं 2. 68 तथा t का मान 1.21 प्राप्त हुआ है। जो की टी तालिका मूल्य के दोनों ही स्तरों से कम है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस परिकल्पना के अनुसार सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

चार्ट संख्या 4.1

सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि का आरेख–

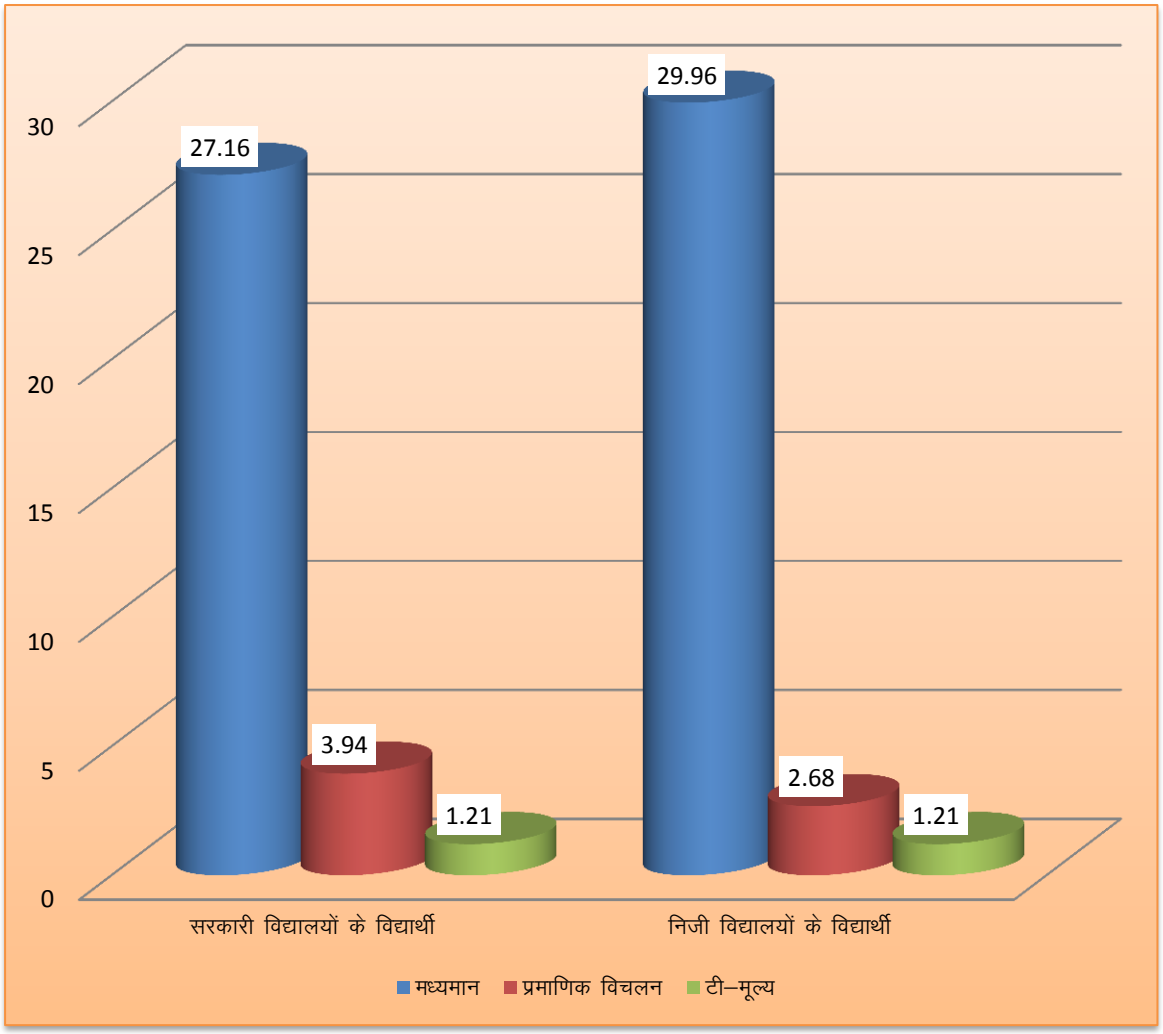

तालिका संख्या 4.2

परिकल्पना–2

सरकारी व निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र. सं.	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रामाणिक विचलन (S.D.)	t मूल्य	स्वीकृत/अस्वीकृत
1.	सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थी	30	14.3	3.49	2.40	अस्वीकृत
2.	निजी विद्यालयों के विद्यार्थी	30	16.2	2.54		

$df = (N_1 + N_2 - 2)$ $df = (30 + 30 - 2) = 58$

df = 58 के लिए t का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर मान 2.00

0.01 स्तर पर मान 2.66

विश्लेषणः–

तालिका 4.2 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि के प्रति मध्यमान क्रमशः 14.3 एवं 16.2, प्रमाणिक विचलन 3.49 एवं 2.54 तथा t का मान 2.40 प्राप्त हुआ है। जो कि टी–तालिका के मूल्य 0.05 स्तर के मान से ज्यादा है इसलिए इस

स्तर पर परिकल्पना अस्वीकृत है किन्तु 0.01 स्तर के मान से टी का मूल्य कम है अतः परिकल्पना स्वीकृत है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस परिकल्पना के अनुसार सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

चार्ट संख्या 4.2

सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का आरेख–

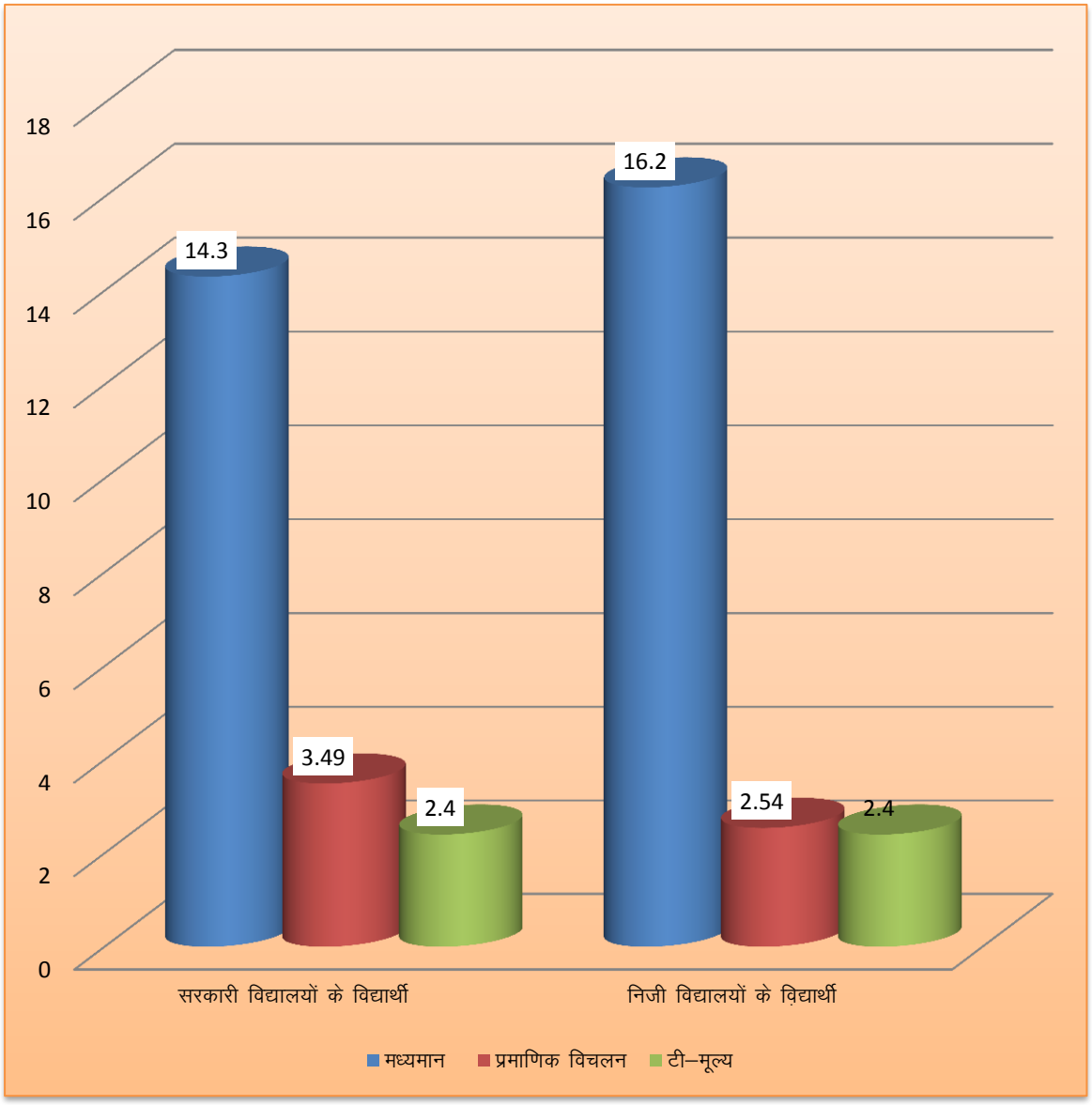

तालिका संख्या 4.3

परिकल्पना–3

सरकारी व निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र. सं.	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रामाणिक विचलन (S.D.)	t मूल्य	स्वीकृत/अस्वीकृत
1.	सरकारी विद्यालय के विद्यार्थी	30	12.86	2.64	2.81	अस्वीकृत
2.	निजी विद्यालय के विद्यार्थी	30	13.93	2.19		

$df = (N_1 + N_2 - 2)$ $df = (30 + 30 - 2) = 58$

df = 58 के लिए t का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर मान 2.00

0.01 स्तर पर मान 2.66

विश्लेषणः–

तालिका 4.13 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता के प्रति मध्यमान क्रमशः 12.86 एवं 13.93, प्रमाणिक विचलन 2.64 एवं 2.19 तथा t का मान 2.81 प्राप्त हुआ है जो कि df के 0.01 एवं 0.05 के मान से ज्यादा है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस परिकल्पना के अनुसार सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

चार्ट संख्या 4.3

सरकारी व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता का आरेख–

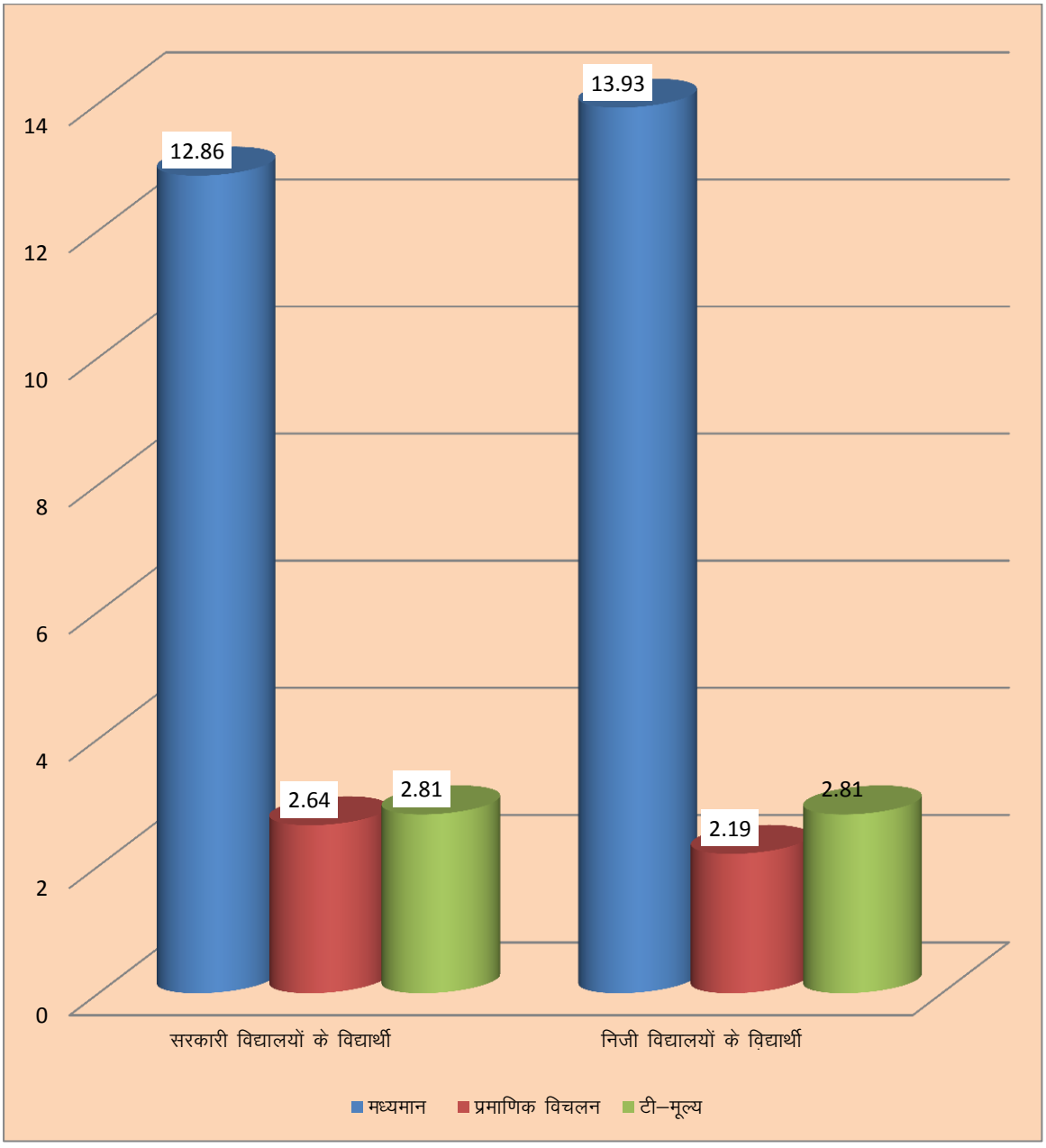

4.4 प्रतिशत विवरणः—

सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों का प्रतिशत

$$\text{प्रतिशन :—} \quad \frac{\text{प्राप्तांक}}{\text{कुल प्राप्तांको का योग}} \times 100$$

$$\text{प्रतिशत} = \frac{815}{1200} \text{ X } 100$$

$$= 67.92\ \%$$

निजी विद्यालय के विद्यार्थियों का प्रतिशत

$$\text{प्रतिशत} = \frac{899}{1200} \text{ X } 100$$

$$= 74.92\ \%$$

विश्लेषणः—

सरकारी विद्यालय के विद्यार्थिरूों का प्रतिशत 67.92 प्राप्त हुआ तथा निजी विद्यालय के विद्यार्थियों का प्रतिशत 74.92 प्राप्त हुआ जो कि माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों का प्रतिशत निजी विद्यालयें के विद्यार्थियों के प्रतिशत से कम प्राप्त हुआ है।

अतः सरकारी विद्यालयों में विद्यार्थियों पर जीवनवृत्ति परिकपक्वता का शैक्षिक उपलब्धि पर निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की तुलना में कम प्रभाव पडता है।

तालिका संख्या 4.4

परिकल्पना–4

सरकारी व निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों की जीवनवृति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र.सं	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रामाणिक विचलन (SD)	t मूल्य	स्वीकृत / अस्वीकृत
1.	सरकारी विद्यालयों के छात्र	15	22.67	5.36	4.72	अस्वीकृत
2.	निजी विद्याीलयों के छात्र	15	28.67	4.36		

$df = (N_1 + N_2 - 2)$ $df = (15 + 15 - 2) = 28$

df = 28 के लिए t का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर मान 2.04

0.01 स्तर पर मान 2.75

विश्लेषणः–

तालिका 4.4 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की जीवनवृति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्रति मध्यमान क्रमशः 22.67 एवं 28.67, प्रामाणिक विचलन 5.36 एवं 4.36 तथा t का मान 4.72 प्राप्त हुआ है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस परिकल्पना के अनुसार सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्रों की जीवनवृति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर पाया गया है। अतः परिकल्पना अस्वीकृत की जाती है।

चार्ट संख्या 4.4

सरकारी व निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्रों की जीवनवृति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

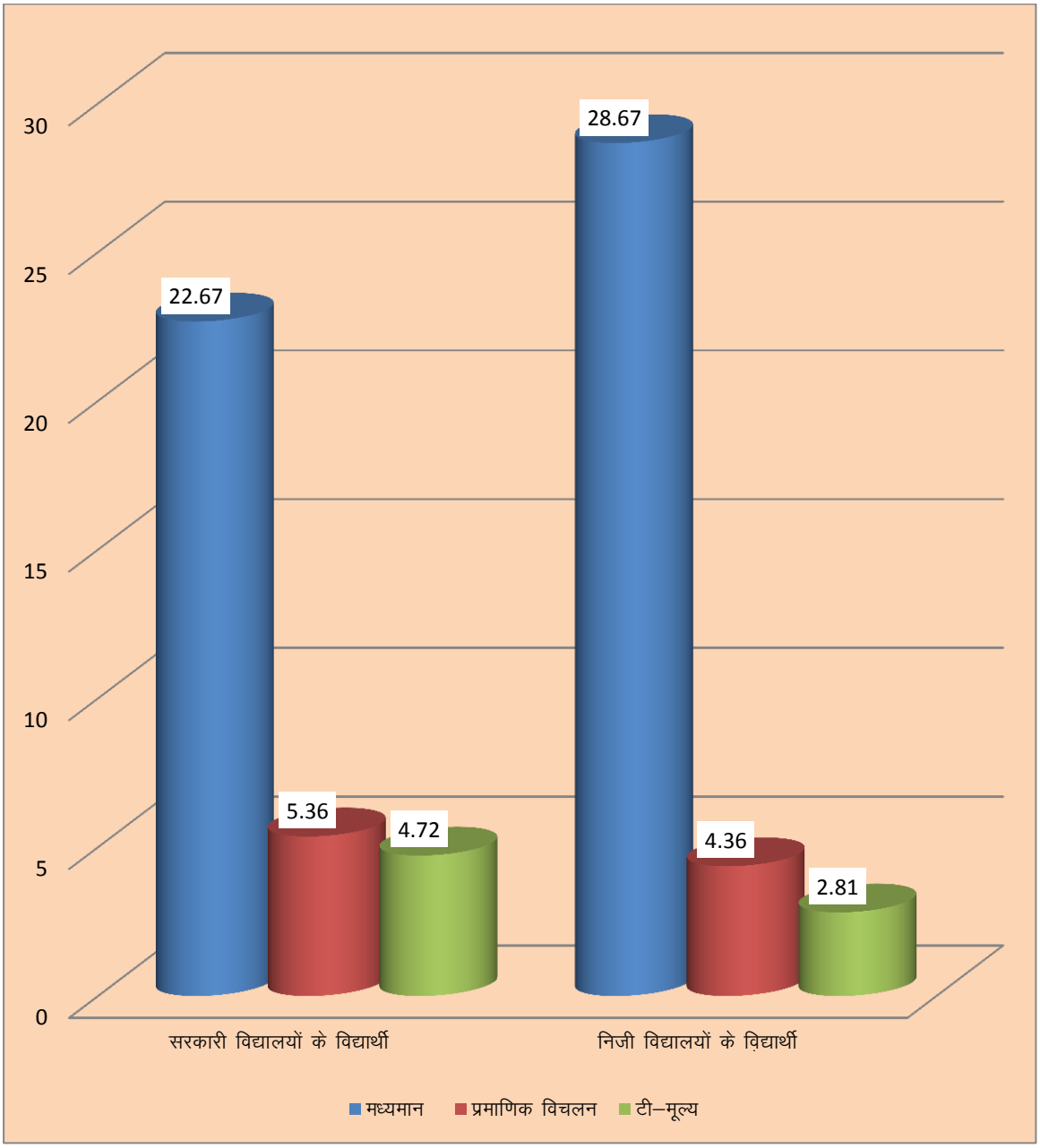

तालिका संख्या 4.5

परिकल्पना–5

सरकारी व निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के छात्राओं की जीवनवृति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

क्र. सं	समूह	संख्या (N)	मध्यमान (M)	प्रामाणिक विचलन (SD)	t मूल्य	स्वीकृत / अस्वीकृत
1.	सरकारी विद्यालयों की छात्राएं	15	31.6	4.29	0.59	स्वीकृत
2.	निजी विद्याीलयों की छात्राएं	15	31.2	3.19		

$df = (N_1 + N_2 - 2)$ $df = (15 + 15 - 2) = 28$

df = 28 के लिए t का अपेक्षित मान 0.05 स्तर पर मान 2.04

0.01 स्तर पर मान 2.75

विश्लेषणः–

तालिका 4.5 का अवलोकन करने पर ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर सरकारी व निजी विद्यालयों की छात्राओं की जीवनवृति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि के प्रति मध्यमान क्रमशः 31.6 एवं 31.2, प्रामाणिक विचलन 4.29 एवं 3.19 तथा t का मान 0.59 प्राप्त हुआ है जो की टी तालिका मूल्य के दोनों ही स्तरों से कम है।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि इस परिकल्पना के अनुसार सरकारी व निजी विद्यालयों छात्राओं की जीवनवृति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया गया है। अतः परिकल्पना स्वीकृत की जाती है।

चार्ट संख्या 4.5

सरकारी व निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों की छात्राओं की जीवनवृति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

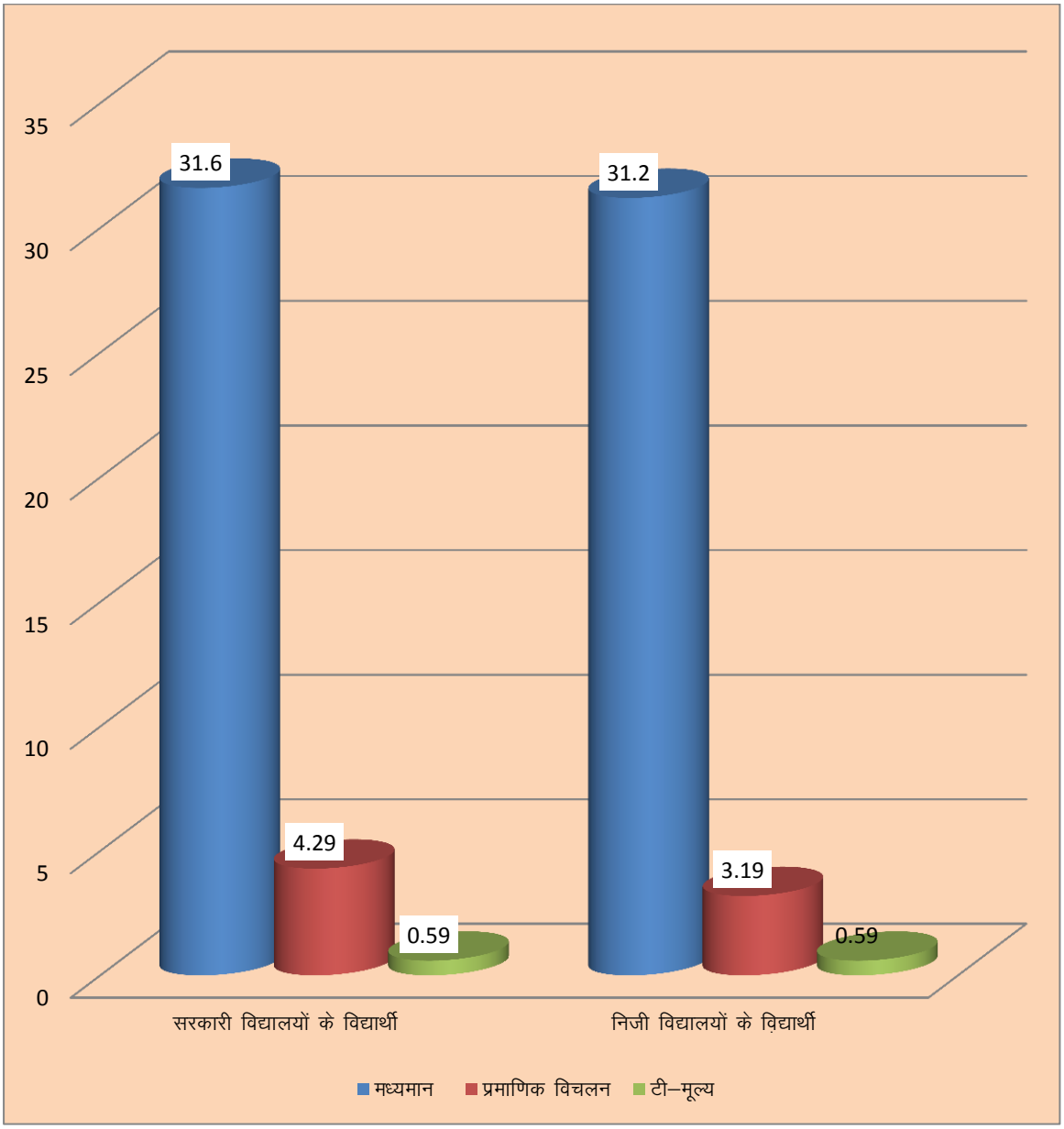

पंचम अध्याय

शोध सारांश एवं निष्कर्ष

"अध्ययनों के सम्पूर्ण परिणामों की रूचि वाले व्यक्तियों के समक्ष पर्याप्त विचार-विमर्श करने और उनके परिणामों को इस प्रकार व्यवस्थित करना कि प्रत्येक पाठक तथ्यों को समझने और निष्कर्षो की वैधता स्वयं निर्धारित करने में समर्थ हो सके।"

..... **अमेरिकन मार्केटिंग सोसायटी**

पंचम अध्याय

शोध सारांश एवं निष्कर्ष

5.1 प्रस्तावनाः–

आज प्रतियोगिता एवं तेजी से होते हुए तकनीकी विकास के युग में विद्यार्थी विस्तृत दृष्टिकोण के साथ विषयवस्तु के अधिगम हेतु उच्च मनोबल रखते है जिससे कि वे अपना लक्ष्य प्राप्त कर सके। अपनी योग्यताओं, क्षमताओं, कौशलों, ज्ञानात्मक संरचना, रूचि, मूल्य पद्धति तथा व्यक्तित्व गुणों के अनुसार सही कैरियर का चयन करके व्यक्ति अपनी संभव शक्तियों के साथ उच्च सीमा तक संतोष प्राप्त कर कार्य क्षेत्र में प्रदर्शन कर सकता है इसी कारण से प्रत्येक बालक को अपने कैरियर के प्रति निर्णय लेने में गंभीर होना चाहिए क्योंकि इस निर्णय के आधार पर ही वह आजीवन व्यवायिक तथा अपनी सामाजिक पहचान को आधार प्रदान कर सकता है। विद्यार्थी के विभिन्न प्रयासों के बाद भी उनकी केरिश्यर के प्रति निर्णय क्षमता अथवा व्यवसायिक परिपक्वता का वास्तव में विद्यालयी वातावरण तथा शैक्षिक उपलब्धि से प्रभावित होती है। जिसके निष्कर्ष को ज्ञात कर संभावित चरों में अपेक्षित सुधार करके भारत के भविष्य को संवारा जा सकेगा तथा प्रत्येक बालक की क्षमताओं का उपयोग किया जा सकेगा।

5.2 शोध अध्ययन की आवश्यकता :–

हमारे देश में युवाओं तथा विद्यार्थियों की एक बहुत बड़ी संस्था अपने कैरियर का नियोजन उपयुक्त तथा बुद्धिमतापूर्ण ढ़ंग से क्यों नही कर पा रही है। अतः

आवश्यक हो जाता है यह ज्ञात किया जाए कि विद्यार्थियों को इन प्रयासों के बाद भी उनकी कैरियर के प्रति निर्णय क्षमता अथवा व्यावसायिक परिपक्वता क्या वास्तव में शैक्षिक उपलब्धि से प्रभावित होती है। जिसके निष्कर्ष से हम विद्यार्थियों के भविष्य को बनाने के लिए उनकी क्षमताओं का उचित उपयोग कर सके।

5.3 समस्या कथनः–

"विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन"

5.4 शोध के उद्देश्यः–

1. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों के जीवनवृत्ति परिपक्वता का अध्ययन करना।
2. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।
3. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता व शैक्षिक उपलब्धि के मध्य संबंध का अध्ययन करना।
4. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों का लिंग भेद के आधार पर जीवनवृत्ति परिपक्वता के अन्तर का अध्ययन करना।
5. माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों का लिंग भेद के आधार पर शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

5.5 परिकल्पनाएंः–

1. सरकारी एवं निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. सरकारी एवं निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. सरकारी एवं निजी माध्यमिक स्तर के विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

5.6 शोध विधिः–

शोध कार्य सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जाता हैं

5.7 न्यादर्शः–

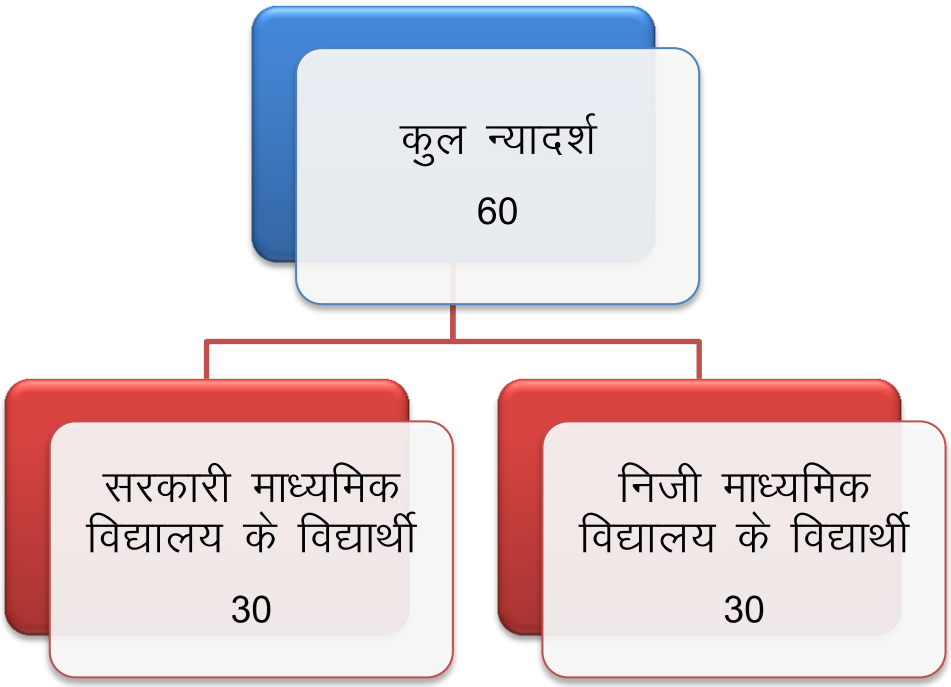

5.8 चरः–

चर दो प्रकार के होते हैः–

1. स्वतंतत्र चर–इस अध्ययन में स्वतंत्र चर जीवनवृत्ति परिपक्वता है।

2. आश्रित चर–इस अनुसंधान में आश्रित चर शैक्षिक उपलब्धि है।

5.9 शोध अध्ययन के स्त्रोतः–

शोध अध्ययन हेतु तथ्य संकलन के लिए निम्न स्त्रोत का प्रयोग किया गया है–

1. **प्राथमिक स्त्रोतः–**

इसमें शोधकर्त्री द्वारा स्वयं अध्ययन क्षेत्र में जाकर तथ्यों का संकलन किया गया है।

2. **द्वितीयक स्त्रोतः–**

पाठ्य–पुस्तकों के रूप में भिन्न क्षेत्रों में हुए अनुसंधानों का सारांश, विश्वकोष, शोधपत्र–पत्रिकाओं का उपयोग किया गया है।

5.10 शोध में प्रयुक्त उपकरणः–

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया जाता है।

5.11 शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीः–

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्री ने निष्कर्ष व परिणाम निकालने के लिए निम्नलिखित सांख्यिकी का प्रयोग किया है–

5.12 प्रस्तुत शोध का निष्कर्षः–

कोई भी अनुसंधान कार्य तक तक पूर्ण नहीं माना जाता जब तक उसके द्वारा किन्हीं निष्कर्षो पर न पहुंचा जाएं। निष्कर्ष में उन सभी तथ्यों का सार होता है। जिनका अध्ययन शोधकर्त्री ने विभिन्न अध्ययनों के अन्तर्गत किया है। एक उत्तम शोधकार्य की सबसे बड़ी विशेषता यह होती है कि उसके निष्कर्ष वस्तुनिष्ठ एवं वैज्ञानिक उपकरणों तथा विधियों द्वारा संग्रहित आंकड़ों पर आधारित होती है। प्राप्त समग्र के विश्लेषण के आधार पर हम जिन निष्कर्षों पर पहुंचे है ये निष्कर्ष अन्तिम नहीं है क्योंकि इनका आधार एक सीमित न्यादर्श है। प्रस्तुत अध्ययन में मुख्य रूप से निम्न निष्कर्ष निकलते है–

सारणी 4.1 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 1 माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है। यह परिकल्पना स्वीकृत होती है। दोनों समूहों के मध्यमानों के देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष पाया गया है कि निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक है। लेकिन यह अन्तर सार्थक नहीं पाया गया।

सारणी 4.2 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 2 माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अन्तर नहीं है। यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत है। दोनों समूहों के मध्यमानों के देखने के

उपरान्त यह निष्कर्ष पाया गया है कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक है। यह अन्तर सार्थक पाया गया है।

सारणी 4.3 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 3 माध्यमिक स्तर के सरकारी विद्यालयों व निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है। यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत है। दोनों समूहों के मध्यमानों के देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष पाया गया है कि सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का मध्यमान निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों के मध्यमान से अधिक है। यह अन्तर सार्थक पाया गया है।

सारणी 4.4 में उल्लेखित परिणामों के आधर पर शून्य परिकल्पना संख्या 4 माध्यमिक स्तर व निजी विद्यालयों के छात्रों की जीवनवृत्ति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। यह शून्य परिकल्पना अस्वीकृत है। दोनों समूहों के मध्यमानों के दोनो के उपरान्त यह निष्कर्ष पाया गया है कि सरकारी विद्यालयों के छात्रों का मध्यमान निजी विद्यालयों के छात्रों से कम है। यह अंतर सार्थक पाया गया।

सारणी 4.5 में उल्लेखित परिणामों के आधार पर शून्य परिकल्पना संख्या 5 माध्यमिक स्तर के सरकारी व निजी विद्यालयों के छात्राओं की जीवनवृति परिपक्वता एवं शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है। यह शून्य परिकल्पना स्वीकृत है। दोनों समूहों के मध्यमानों के

देखने के उपरान्त यह निष्कर्ष पाया गया है सरकारी विद्यालयों से छात्राओं का मध्यमान निजी विद्यालयों की छात्राओं से अधिक है। यह अंतर सार्थक नहीं है।

सारणी 4.6 प्रतिशत विवरण में सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का प्रतिशत 67. 92 प्रतिशत तथा निजी विद्यालयों के विद्यार्थियों का प्रतिशत 74.92 प्रतिशत प्राप्त हुआ है। सरकारी विद्यालयों के विद्यार्थियों का प्रतिशत निजी विद्यालय के विद्यार्थियों से कम है।

अतः निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि जीवनवृत्ति परिपक्वता का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव सरकारी विद्यालय के विद्यार्थियों पर कम पड़ता है तथा निजी विद्यालय के विद्यार्थियों पर अधिक प्रभाव पड़ता है।

5.13 शोध संबंधी शैक्षिक निहितार्थः–

किसी भी अनुसंधान की वास्तविक सार्थकता तभी होती है जबकि वह समाज के लिए उपयोगी है। यदि अनुसंधान की किसी भी क्षेत्र में कोई उपयोगिता नहीं होती तो ऐसे अनुसंधान पर धन एवं समय बर्बाद करना व्यर्थ होता है। अतः प्रस्तुत शोधकर्त्री की उपयोगिता शिक्षा विभाग के लिए अध्यापकों के लिए अभिभावकों के लिए एवं विद्यार्थियों के लिए महत्वपूर्ण है।

1. **शिक्षा विभाग के लिएः–**

प्रस्तुत शोधकार्य शिक्षा विभाग के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है। शिक्षा विभाग को महाविद्यालय स्तर पर व्यावसायिक पाठ्यक्रमों जिसमें विद्यार्थियों की रूचि से लेकर अपने कैरियर पर अधिक ध्यान दे सके तथा जो छात्र–छात्राओं की रूचि तथा सुविधानुसार हो, को ध्यान में रखते हुए

पाठयक्रम को निर्धारित किया जा सकता है तथा भावी जीवन से संबंधित उपयोगी विषय–वस्तु का समावेश कर सकते है।

2. **विद्यार्थियों के लिएः–**

विद्यार्थी अपनी अभिवृत्ति रूचित व योग्यताओं व सार्मथ्य को जानकर विषय का चयन करने में मदद कर सकते है।

3. **अभिभावकों के लिएः–**

अभिभावक बिना दबाव के अपने बच्चों को क्षमता अनुसार विषय चयन में मदद कर सकते है। अपने छोटे–छोटे कार्यो के निर्णय स्वयं लेने का अवसर प्रदान करना चाहिए। माता–पिता को अपने पारिवारिक वातावरण को सुधारने का प्रयत्न करना चाहिए। इस तकनीकी युग में बच्चों के ज्ञानवर्द्धन के लिए अपनी सामर्थ्यनुसार सुविधाएं सुलभ करानी चाहिए।

5.14 भावी अनुसंधान के लिए सुझावः–

1. प्रस्तुत शोध कार्य में 20 से 25 वर्ष की आयु वर्ग के विद्यार्थी को भी लिया जा सकता है।
2. विद्यालय के प्रकारों का ध्यान में रखते हुए सरकारी तथा निजी विद्यालयों पर यह शोधकार्य किया गया है इसके अतिरिक्त आवासीय विद्यालय तथा गैर आवासीय विद्यालय के विद्यार्थियों की तुलनात्मक अध्ययन भी किया जा सकता है।
3. अनुसूचित जाति तथा जनजातियों के विद्यार्थियों का उपरोक्त चरों के साथ तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

4. निम्न शैक्षिक उपलब्धि तथा उच्च शैक्षिक उपलब्धि के आधार पर विद्यार्थियों के कैरियर निर्णय क्षमता का अध्ययन किया जा सकता है।

5. कैरियर परिपक्वता के आधार पर शहरी व ग्रामीण विद्यार्थियों का तुलनात्मक अध्ययन किया जा सकता है।

6. जीवनवृत्ति के साथ व्यक्तित्व, अध्ययन, आदते, समायोजन, दुश्चिंता आदि चरों को भी आगामी हेतु समाहित किया जा सकता है।

7. इस अध्ययन को और अधिक बड़े न्यादर्श पर भी किया जा सकता है।

8. विभिन्न वातावरण के प्रभावों के कैरियर के प्रति निर्णय क्षमता के अलग–अलग भागों अभिवृत्ति परीक्षण तथा क्षमता परीक्षण पर किया जा सकता है।

5.15 उपसंहार :–

प्रस्तुत शोधकार्य विद्यार्थियों की जीवनवृत्ति परिपक्वता का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पडने वाले प्रभाव से सम्बन्धित है। विद्यार्थी की राष्ट्रनिर्माता है। यदि विद्यार्थी की पारिवारिक व सामाजिक स्थिति अच्छी होती है तो इसमें उनका मानसिक विकास भी प्रभावित होता है और उनकी शैक्षिक उपलब्धि भी प्रभावित होती है। संतोषजनक ढंग से कैरियर को प्राप्त करना आज के युवाओं का लक्ष्य बन गया है। जिसमें विद्यार्थी का मनोबल उसके कैरियर के चयन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. **राय पारस नाथ** : अनुसंधान परिचय
2. **डॉ. रक्तोगी आलोक एवं श्री शरण** : शिक्षा मनोविज्ञान
3. **पाठक पीडी** : शिक्षा मनोविज्ञान
4. **डॉ. शर्मा, आर.ए.** : शिक्षा अनुसंधान
5. **अस्थाना, विपिन** : मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन
6. **कपिल एच.के** : सांख्यिकी के मूल तत्व
7. **रमन बिहारीलाल** : शिक्षा के दार्शनिक और समाज शास्त्रीय सिद्धान्त।
8. **डॉ. शर्मा आर.ए.** : शिक्षा अधिगम में नवीन प्रर्वतन
9. **गडे एवं हॉट** : मैथडस इन सोशल रिसर्च, न्यूयार्क मेग्रहिल बुक कम्पनी 1962
10. **पुरोहित जगदीश नारायण शमा ‘** : **मुरली मनोहर** : भावी शिक्षकों के लिए आधारभूत कार्यक्रम, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर
11. **सुखिया एवं मल्होत्रा** : शैक्षिक अनुसंधान के मूल तत्व (1990–1991)
12. **आर.एन बेरियल** इन एम.डी.बुच, '' ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'', 1991

13. **डा. आमिधा परवीन** ''शिक्षण एवं अधिगम के मनोसामाजिक आधार''

14. **आर.ए. शर्मा** ''शिक्षा अनुसंधान''

15. **अस्थानाएवं अस्थाना 2005** "मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन" विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा

16. **आर, एस. शर्मा 2004** शोध प्रबन्ध लेखन", कमल बुक डिपो, मेरठ ।

17. **चौधरी सी.एम.** अनुसंधान प्रविधियाँ 1997, स्बलाइम पब्लिकेशन्स जयपुर

18. **डॉ. एस.एस.माथुर,** ''शिक्षा मनोविज्ञान''

19. **डॉ. शर्मा ओ.पी.** "शैक्षिक अनुंधान एवं सांख्यिकी" 2005, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

20. **डॉ. जे.सी. अग्रवाल 2005** "शिक्षा मनोविज्ञान", विजय प्रकाशन मन्दिर,आगरा

21. **डॉ. सीताराम जायसवाल** ''शिक्षा मनोविज्ञान'', न्यू बिल्डिंग्स, अमीनाबार, लखनऊ, 1970

22. **आर.ए.शर्मा** ''शिक्षा अनुसंधान'', आर.लाल. बुकडिपो, मेरठ, 1994–95

23. **डॉ. आर.ए.शर्मा,** ''शिक्षा मनोविज्ञान के मनोसामाजिक आधार''

24. **डॉ. ए.वी. एवं मीनाक्षी भट्टनागर** ''मनोविज्ञान एवं शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन''

25. **एच.एम. वाल्केयर, लियो, जे. (1965)** ऐलिमेन्ट्री स्टेटिक्स मेथडस्, आई. बी.एच. पब्लिशिंग कोपोरेशन कलकत्ता।

26. **एस बेगम भाकीला (1977)** हाफिज जे.मैसूर इण्डियन साइकोलॉजी एक्सटैक्स,वोल्यूम–12

27. **लिम्हाकार बी.एम.** इन एम.डी.बुच, ए ''सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन'', 1968

28. **कपिल एच. के.** "अनुसंधान विधियाँ" 2006, एच.पी. भार्गव बुक हाउस 4/6 कचहरी घाट आगरा

29. **कोली लक्ष्मीनाराण** "रिसर्च मैथडालॉजी" 2006, वाई. के. पब्लिशर्स आगरा

30. **पाठक पी.डी** "भारतीय शिक्षा और समस्याएँ" 2005, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा

परिशिष्ट